

लाल-किताब जीवन चक्र

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N



Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000



श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काशपेयं महाद्युतिम्।	तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।	नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।	कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।	सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।	बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।	सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।	छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।	सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।	रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
 दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
 नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
 ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥
 ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः।
 ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरूप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूँ। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूँ। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूँ। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक को मैं प्रणाम करता हूँ। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूँ। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूँ। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

मुख्य विवरण

लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	11 नवम्बर 2011
जन्म समय	11:11:00
जन्म दिन	शुक्रवार
जन्म स्थान	khatu
राज्य	rajasthan
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	11:17:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	14:37:47 hrs
इष्ट काल	12: 29: 52 Ghati

अवकहड़ा चक्र

पाया	लौह
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुश्पद
योनि	मेष (स्त्री)
गण	राक्षस
नाड़ी	अन्त
रज्जु	नाभि
तत्त्व	पृथ्वी
तत्त्वाधिपति	बुध
विहग	भारधंक
नाड़ी पद	अन्त
वेध	विशाखा
आद्याक्षर	अ
दशा बैलेंस	सूर्य — 5व00मा024दि0
वर्तमान दशा	चन्द्रमा—बुध—गुरु
भयात	10: 20: 16 Ghati
भभोग	66: 41: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	तुला
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	024:01:22
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	06:11:12AM
सूर्यास्त	05:03:49PM
जन्मदिन का ग्रह	शुक्र
जन्मसमय का ग्रह	मंगल

पंचांग विवरण

विक्रम संवत्	2068
शक संवत्	1933
संवत्सर	खर
ऋतु	शरद
मास	अग्रहन
पक्ष	कृष्ण
वार	शुक्रवार
तिथि	प्रतिपदा
नक्षत्र (पद)	कृतिका (1)
योग	वारियन
करण	बल्लव



लग्न
मकर



राशि
मेष

नक्षत्र — पद
कृतिका — 1



लग्नाधिपति
शनि



राशिपति
मंगल



नक्षत्रपति
सूर्य

घात चक्र

कार्तिक अशुभ मास	रविवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मेष अशुभ राशि	मेष अशुभ लग्न	1, 6, 11 अशुभ तिथि
माघ अशुभ नक्षत्र	विषकुम्भ अशुभ योग	बावा अशुभ करन

शुभ बिन्दु

2 मूलांक	8 भाग्यांक	1, 4 मित्रांक
3, 6 शत्रु अंक	17, 19, 22, 26, 28, 31, 35, 37 शुभ वर्ष	शुक्रवार, शनिवार, बुधवार शुभ दिन
शुक्र, शनि, बुध शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य अशुभ ग्रह	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ मित्र राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मित्र लग्न	नीलम शुभ रत्न	नीली, जमुनिया, लाजवर्त शुभ उपरत्न
पन्ना भाग्य रत्न	नरसिंह अनुकूल देवता	लोहा शुभ धातु
श्याम शुभ रंग	पश्चिम दिशा	संध्या शुभ समय
कुलथी, कस्तुरी, कृष्ण गाय, जता शुभ पदार्थ	उड़द शुभ अन्न	तेल शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)



सूर्य

तुला

24:26:58

विशाखा (2)

सम राशि



चन्द्रमा

मेष

28:44:27

कृतिका (1)

नीच राशि



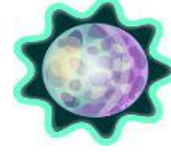
मंगल

सिंह

06:00:11

मघा (2)

सम राशि



बुध

वृश्चिक

16:48:17

ज्येष्ठा (1)

मित्र राशि



गुरु (व.)

मेष

09:30:47

अश्विनी (3)

स्व नक्षत्र



शुक्र

वृश्चिक

16:59:33

ज्येष्ठा (1)

मित्र राशि



शनि

कन्या

29:33:02

चित्रा (2)

सम राशि



राहु

वृश्चिक

21:38:24

ज्येष्ठा (2)

मित्र राशि



केतु

वृष

21:38:24

रोहिणी (4)

नीच राशि



हर्षल (व.)

मीन

06:57:48

उत्तरभाद्र (2)

नीच राशि



नेपच्यून

कुम्भ

04:06:38

धनिष्ठा (4)

सम राशि



प्लूटो

धनु

11:38:00

मूला (4)

सम राशि



लग्न

मकर

02:50:12

उत्तराषाढ़ (2)



10वां कस्प

तुला

17:51:40

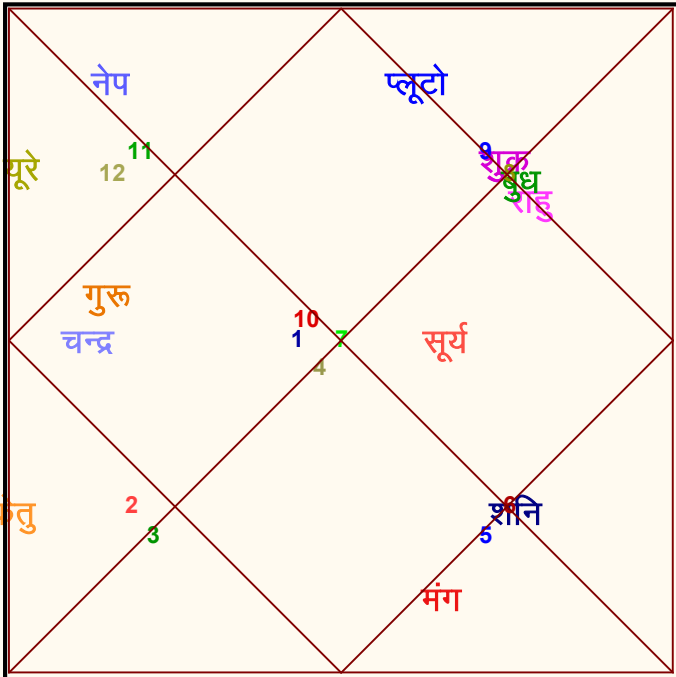
स्वाति (4)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

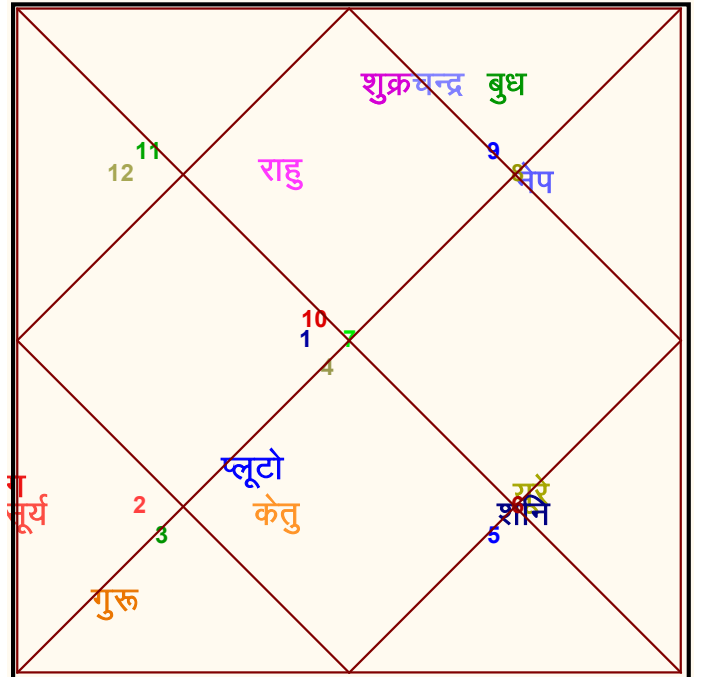
ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		मकर	02:50:12	उत्तराषाढ़ (21)	2		
☉ सूर्य		तुला	24:26:58	विशाखा (16)	2	भ्रात्रि	नीच राशि
☾ चन्द्रमा		मेष	28:44:27	कृतिका (3)	1	अमात्य	सम राशि
♂ मंगल		सिंह	06:00:11	मघा (10)	2	दारा	मित्र राशि
♂ बुध		वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा (18)	1	अपत्या	स्व नक्षत्र
♂ गुरु	व.	मेष	09:30:47	अश्विनी (1)	3	ज्ञाति	मित्र राशि
♀ शुक्र		वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा (18)	1	मात्रि	सम राशि
♂ शनि		कन्या	29:33:02	चित्रा (14)	2	आत्म	मित्र राशि
♂ राहु		वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा (18)	2		नीच राशि
♂ केतु		वृष	21:38:24	रोहिणी (4)	4		नीच राशि
♂ हर्षल	व.	मीन	06:57:48	उत्तरभाद्र (26)	2		सम राशि
♂ नेपच्यून		कुम्भ	04:06:38	धनिष्ठा (23)	4		सम राशि
♂ प्लूटो		धनु	11:38:00	मूला (19)	4		सम राशि

नोट : - (व.) - वक्री, (अ.) - अस्त

लग्न कुण्डली



नवांश कुण्डली



लाल किताब में ग्रह



सूर्य

भाव न. 10, स्वयं का ऋण, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में, बिलमुकाबिल (चन्द्रमा, गुरु)



चन्द्रमा

भाव न. 4, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, भाग्योदय का, शुभ भाव में, साथी (मंगल)



मंगल

भाव न. 8, किस्मत का, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, जन्मसमय का, अशुभ भाव में, साथी (चन्द्रमा)



बुध

भाव न. 11, स्वभाव (केतु), अशुभ भाव में



गुरु

भाव न. 4, उच्चस्थ, मित्र के घर में, शुभ भाव में



शुक्र

भाव न. 11, जन्मदिन का, मित्र के घर में, शुभ भाव में



शनि

भाव न. 9, नेक स्वभाव, राशिफल, जालीमाना ऋण, शुभ भाव में



राहु

भाव न. 11, मित्र के घर में, अशुभ भाव में

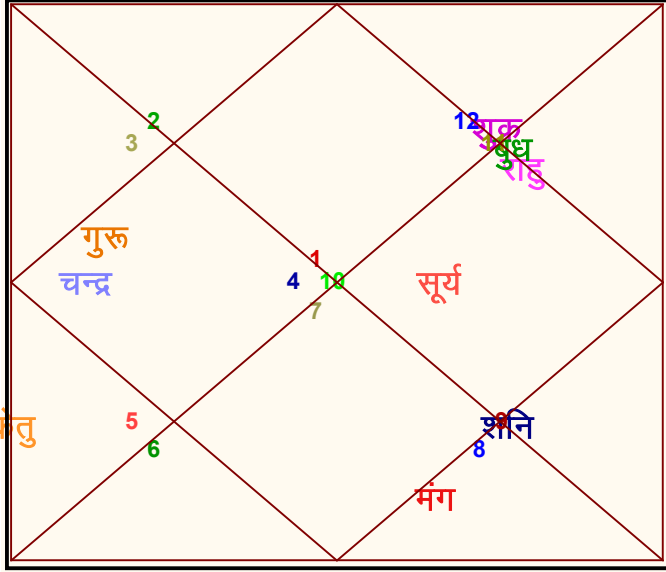


केतु

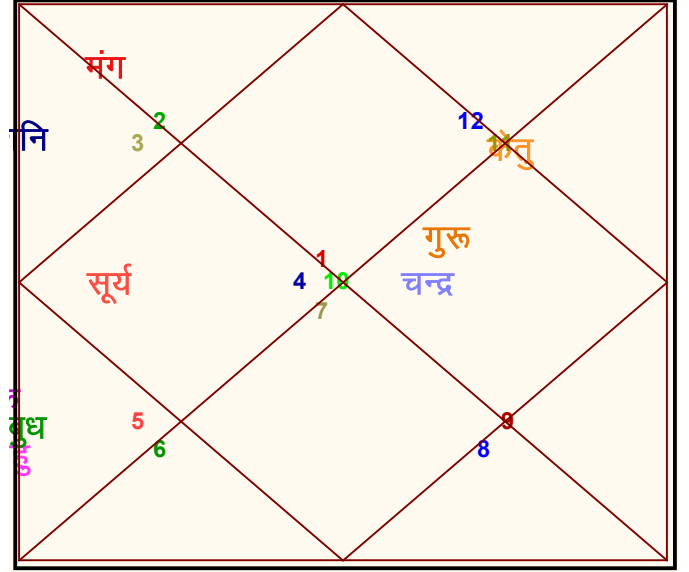
भाव न. 5, अशुभ भाव में

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा



लाल किताब चन्द्र कुण्डली



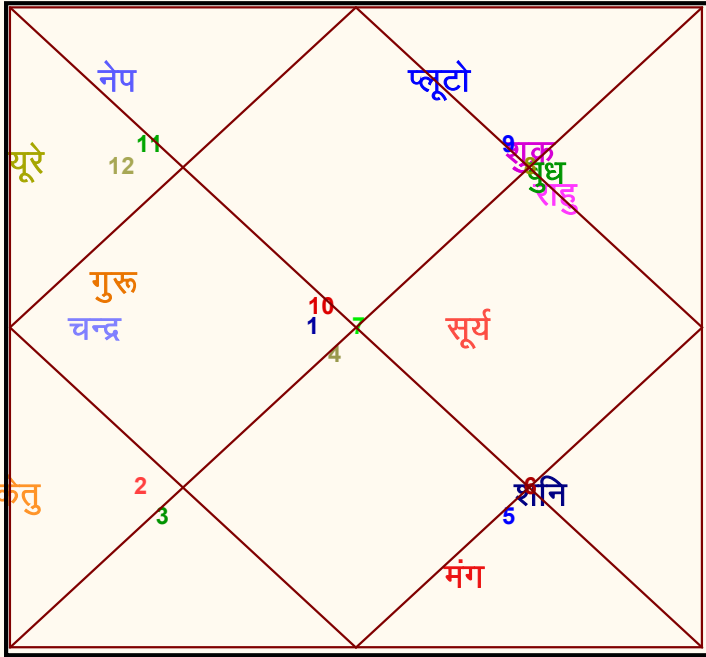
ग्रह योग

सूर्य + गुरु	(दृष्टि-100), चन्द्रमा, वाल्दैनी खुन (वीर्य)
बुध + शुक्र	(युति), सूर्य, स्वास्थ्य/सेहत

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

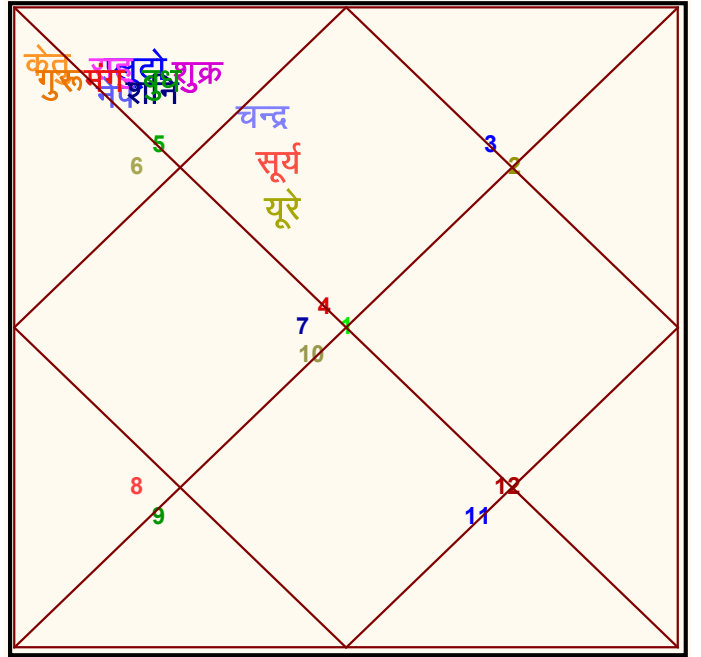
ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य			केतु			बुध, शुक्र, राहु	मंग.
चन्द्रमा	सूर्य(100)	मंग.	बुध, शुक्र, राहु			केतु	
मंगल				चन्द्र, गुरु	केतु	शनि	सूर्य
बुध (बद)					मंग.		शनि
गुरु (बद)	सूर्य(100)	मंग.	बुध, शुक्र, राहु			केतु	
शुक्र (बद)					मंग.		शनि
शनि (बद)			चन्द्र, गुरु	केतु		सूर्य	बुध, शुक्र, राहु
राहु					मंग.		शनि
केतु	शनि(50)	शनि					

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)



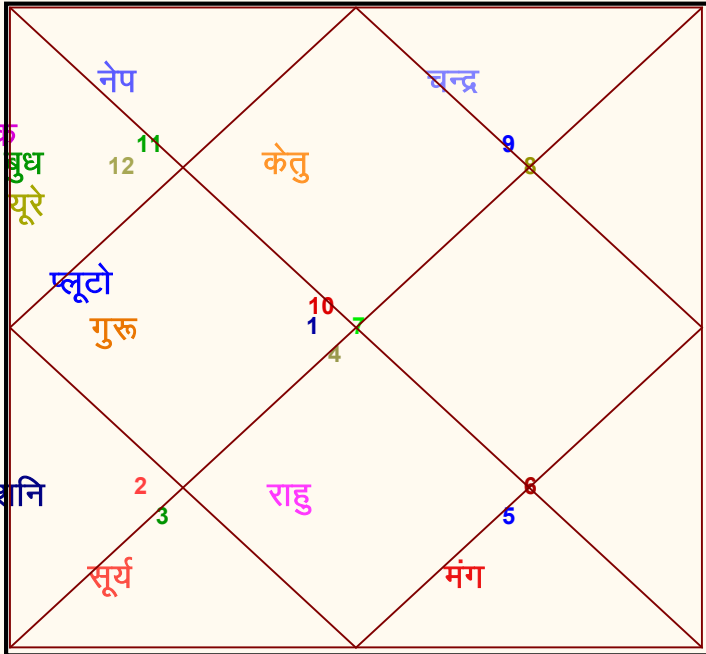
जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)



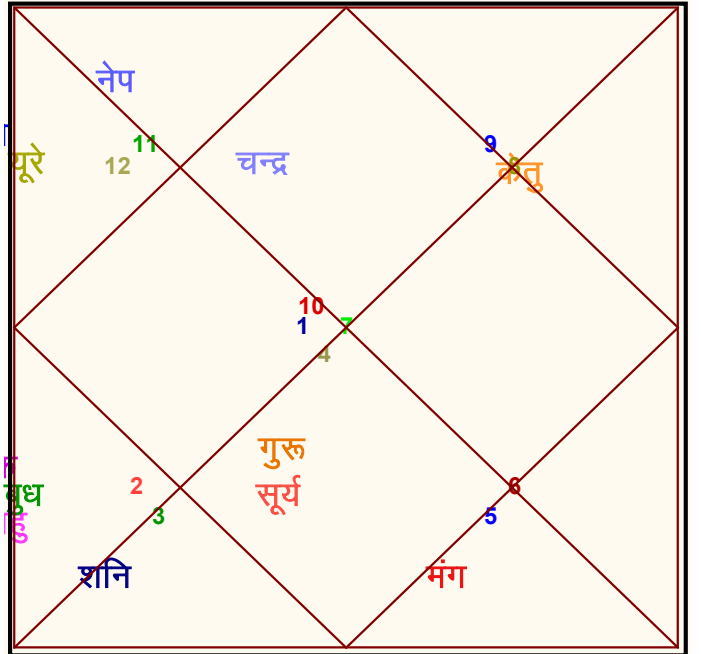
होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुण्डली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)



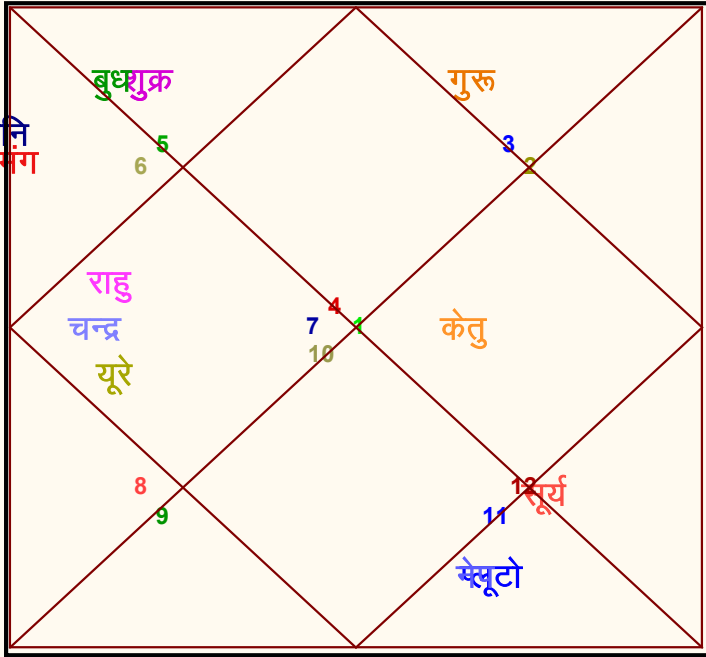
द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई-बहनों, चचेरे भाई-बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)



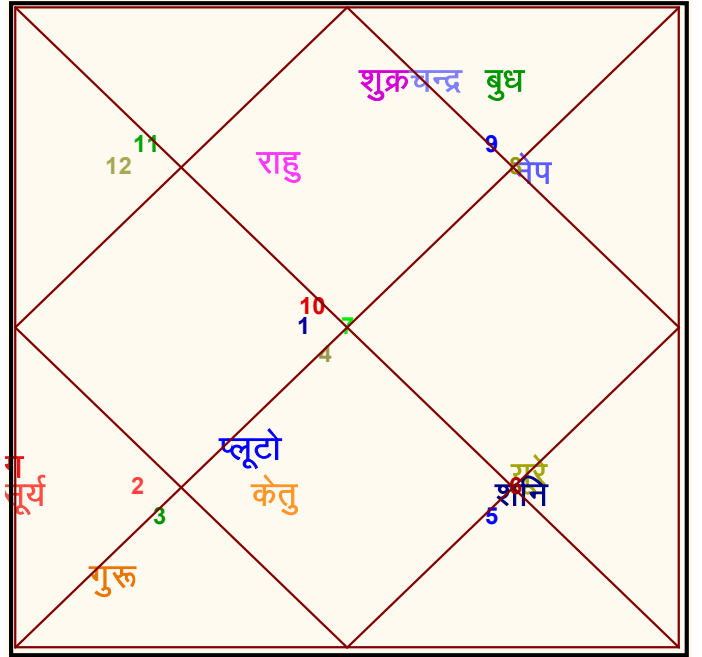
चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)



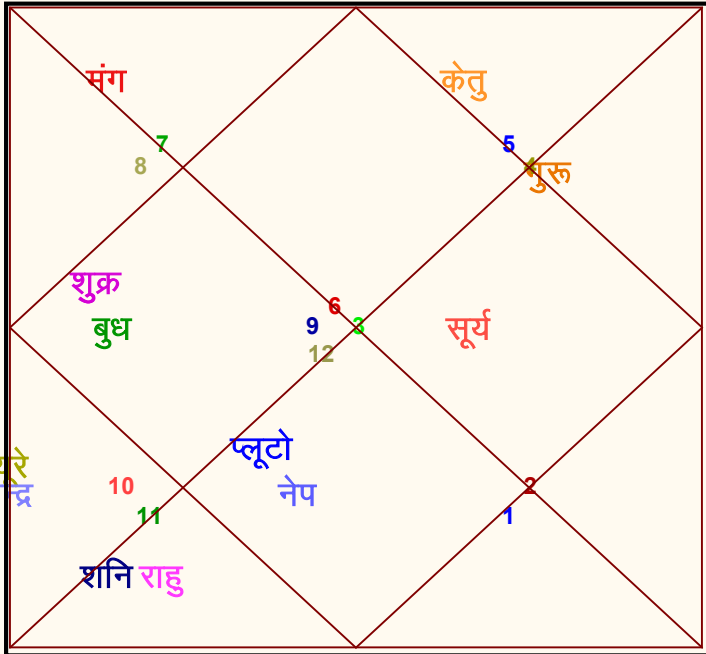
सप्तमांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)



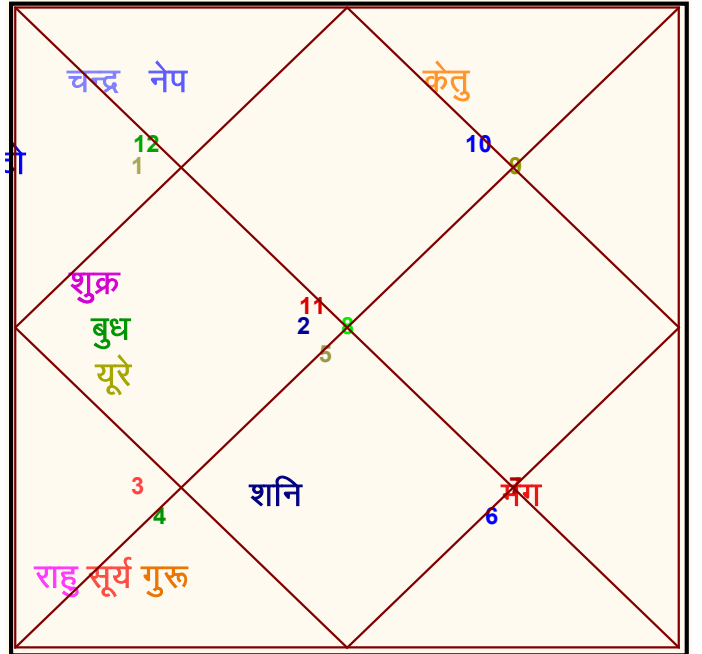
नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)



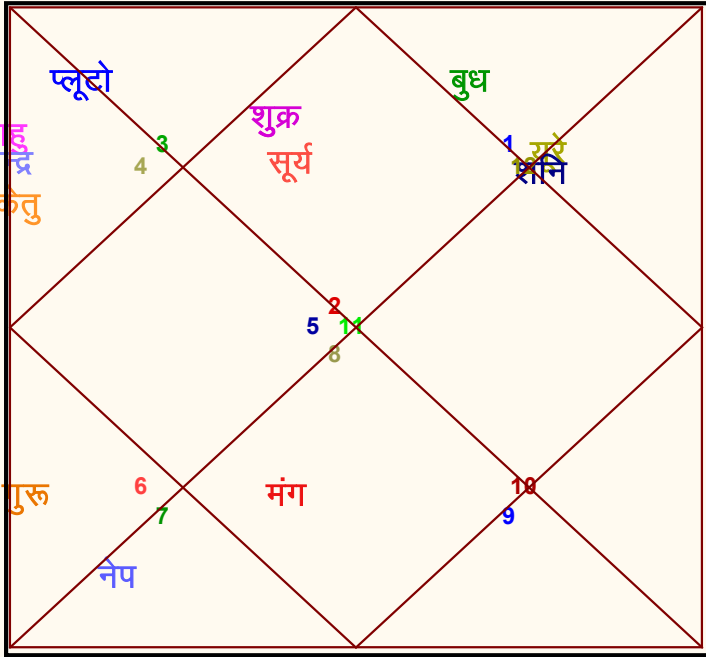
दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

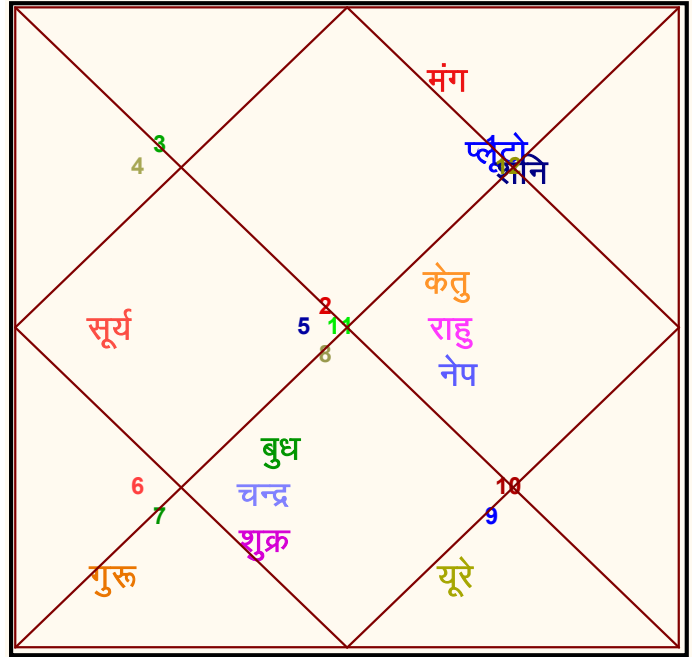


द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता-पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता-पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

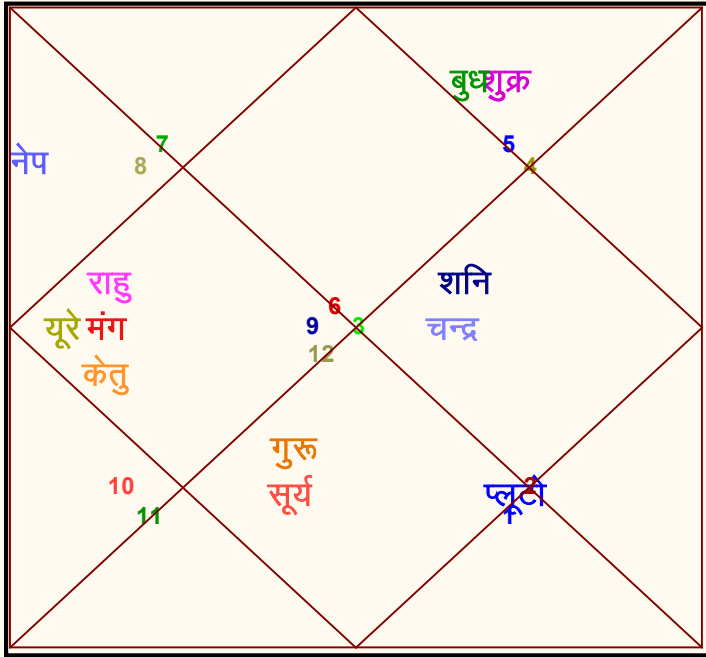
षोडशांश कुण्डली (डी 16)



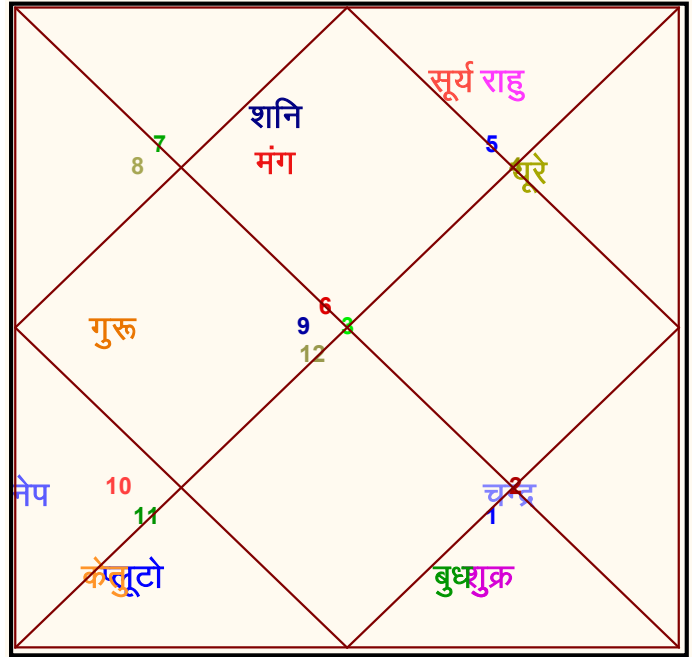
विशांश कुण्डली (डी 20)



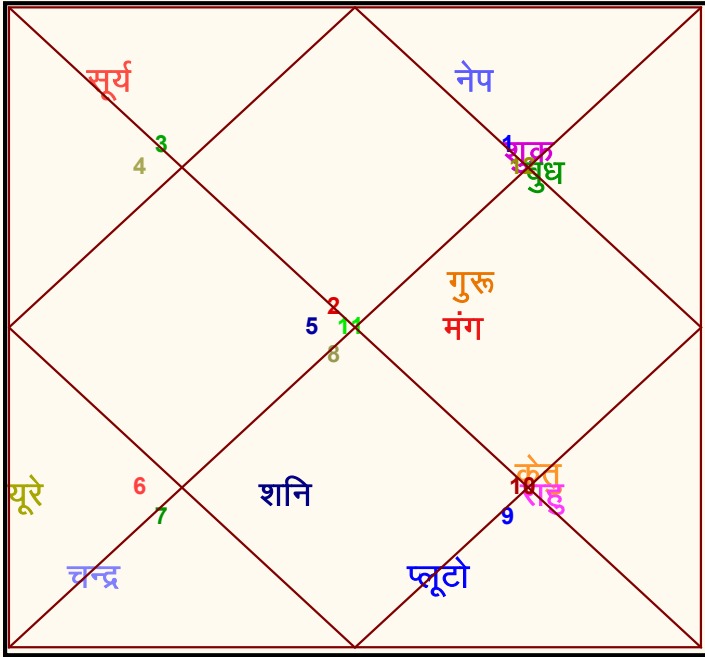
चतुर्विंशांश कुण्डली (डी 24)



सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

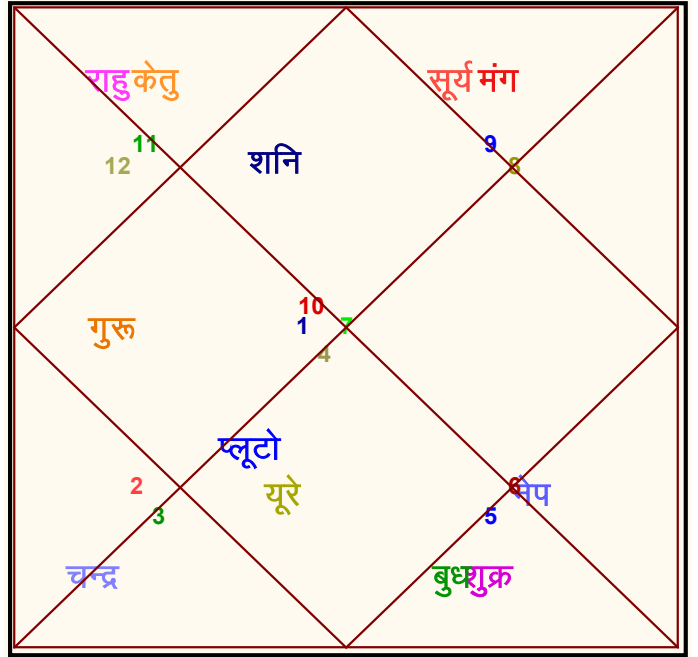


त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)



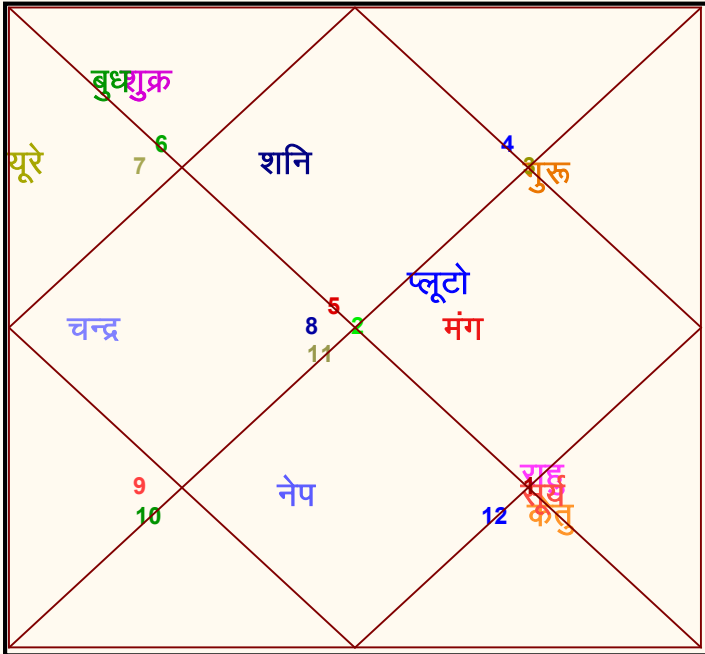
त्रिंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)



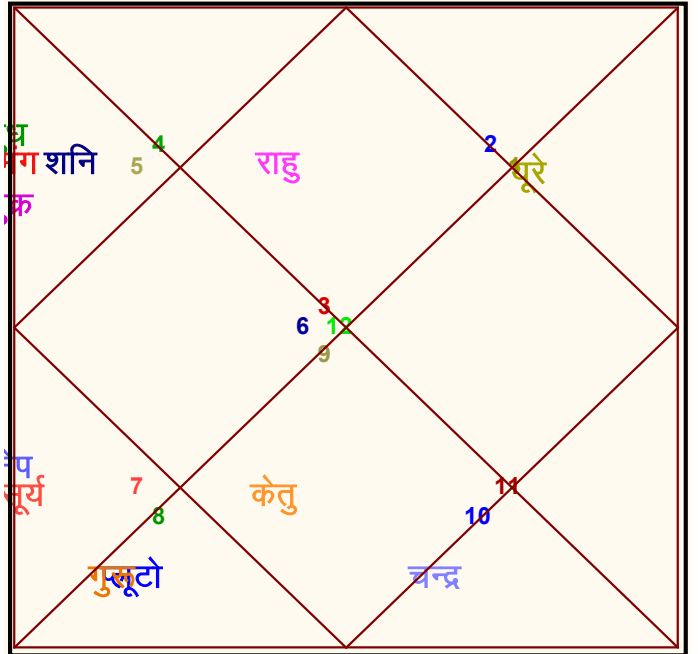
खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)



अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्राकृतिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)



षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।



षडबल और भावबल

12

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	04.82	58.58	02.67	39.40	31.50	16.66	53.18
सप्त वर्ग बल	67.50	52.50	120.00	78.75	37.50	71.25	112.50
युग्म अयुग्म बल	15.00	00.00	15.00	15.00	30.00	15.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	30.00	15.00
द्रेक्कन बल	00.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	00.00
स्थान बल	147.32	186.08	182.67	178.15	174.00	132.91	180.68
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	89.28	139.91	190.28	107.97	105.46	99.94	188.21
दिग बल	57.80	56.37	36.05	44.66	27.77	09.71	31.10
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	165.15	112.75	120.16	127.59	79.36	19.42	103.65
नतोनन्त बल	57.75	02.25	02.25	57.75	00.00	57.75	02.25
पक्ष बल	01.43	58.57	01.43	01.43	58.57	58.57	01.43
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	07.86	06.48	43.92	57.12	45.38	01.88	40.94
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	187.04	97.29	47.60	116.30	178.95	163.20	44.62
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	167.00	97.29	71.05	103.84	159.77	163.20	66.59
चेष्टा बल	07.86	58.57	30.00	45.00	60.00	45.00	30.00
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	15.72	195.23	75.00	90.00	120.00	150.00	75.00
नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	08.57
द्रिक बल	-08.08	-18.63	05.51	-18.21	-24.66	-18.21	06.67
कुल षडबल	451.94	431.12	318.97	391.61	450.36	375.47	301.64
षडबल (रूप में)	7.53	7.19	5.32	6.53	7.51	6.26	5.03
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	115.88	119.75	106.32	93.24	115.48	113.78	100.55
तुलनात्मक स्थिति	1	3	6	4	2	5	7
इष्ट फल	08.17	58.57	08.95	42.11	43.48	27.38	39.94
कष्ट फल	51.83	01.43	51.05	17.89	16.52	32.62	20.06
दिप्ति बल	100.00	58.57	26.15	47.90	55.02	28.78	08.30

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
भावाधिपति बल	301.64	301.64	450.36	318.97	375.47	391.61	431.12	451.94	391.61	375.47	318.97	450.36
भाव दिग्बल	30.00	50.00	50.00	00.00	10.00	10.00	30.00	40.00	20.00	30.00	20.00	50.00
भाव द्विष्टिबल	03.91	12.64	05.60	-22.01	06.55	-06.32	-15.17	04.91	33.33	-15.23	-13.40	-15.88
भावबल योग	335.55	364.28	505.96	296.96	392.03	395.29	445.95	496.85	444.94	390.24	325.57	484.47
भावबल (रूप में)	5.59	6.07	8.43	4.95	6.53	6.59	7.43	8.28	7.42	6.50	5.43	8.07
तुलनात्मक स्थिति	10	9	1	12	7	6	4	2	5	8	11	3

Sun (5 y.0 m.24 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (024:01:22)

अयनांश



सूर्य (6 वर्ष)

11/11/2011 To 05/12/2016		
10th भाव नीच विशेष	तुला राशि विशा. (2) नक्षत्र	मित्र संबन्ध 8 भावपति
सूर्य	-----	-----
चन्द्रमा	-----	-----
मंगल	29-01-2012	00.00
राहु	24-12-2012	00.22
गुरु	12-10-2013	01.12
शनि	23-09-2014	01.92
बुध	31-07-2015	02.87
केतु	05-12-2015	03.72
शुक्र	05-12-2016	04.07



चन्द्रमा (10 वर्ष)

05/12/2016 To 05/12/2026		
4th भाव विशेष	मेष राशि कृति. (1) नक्षत्र	शत्रु संबन्ध 7 भावपति
चन्द्रमा	05-10-2017	05.07
मंगल	06-05-2018	05.90
राहु	05-11-2019	06.48
गुरु	07-03-2021	07.98
शनि	05-10-2022	09.32
बुध	06-03-2024	10.90
केतु	05-10-2024	12.32
शुक्र	06-06-2026	12.90
सूर्य	05-12-2026	14.57



मंगल (7 वर्ष)

05/12/2026 To 05/12/2033		
8th भाव विशेष	सिंह राशि मघा (2) नक्षत्र	सम संबन्ध 4, 11 भावपति
मंगल	03-05-2027	15.07
राहु	21-05-2028	15.48
गुरु	27-04-2029	16.53
शनि	06-06-2030	17.46
बुध	03-06-2031	18.57
केतु	30-10-2031	19.56
शुक्र	30-12-2032	19.97
सूर्य	06-05-2033	21.13
चन्द्रमा	05-12-2033	21.48



राहु (18 वर्ष)

05/12/2033 To 05/12/2051		
11th भाव नीच विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	शत्रु संबन्ध भावपति
राहु	17-08-2036	22.07
गुरु	11-01-2039	24.77
शनि	17-11-2041	27.17
बुध	05-06-2044	30.02
केतु	24-06-2045	32.57
शुक्र	24-06-2048	33.62
सूर्य	19-05-2049	36.62
चन्द्रमा	17-11-2050	37.52
मंगल	05-12-2051	39.02



गुरु (16 वर्ष)

05/12/2051 To 05/12/2067		
4th भाव वक्री विशेष	मेष राशि अरि. (3) नक्षत्र	मित्र संबन्ध 12, 3 भावपति
गुरु	23-01-2054	40.07
शनि	05-08-2056	42.20
बुध	11-11-2058	44.73
केतु	18-10-2059	47.00
शुक्र	18-06-2062	47.93
सूर्य	06-04-2063	50.60
चन्द्रमा	05-08-2064	51.40
मंगल	12-07-2065	52.73
राहु	05-12-2067	53.67



शनि (19 वर्ष)

05/12/2067 To 05/12/2086		
9th भाव विशेष	कन्या राशि चित्रा (2) नक्षत्र	मित्र संबन्ध 1, 2 भावपति
शनि	08-12-2070	56.07
बुध	18-08-2073	59.08
केतु	26-09-2074	61.77
शुक्र	26-11-2077	62.88
सूर्य	08-11-2078	66.04
चन्द्रमा	08-06-2080	66.99
मंगल	18-07-2081	68.58
राहु	24-05-2084	69.68
गुरु	05-12-2086	72.53



बुध (17 वर्ष)

05/12/2086 To 05/12/2103

11th भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबन्ध 6, 9 भावपति
बुध	03-05-2089	75.07
केतु	30-04-2090	77.48
शुक्र	28-02-2093	78.47
सूर्य	05-01-2094	81.30
चन्द्रमा	06-06-2095	82.15
मंगल	02-06-2096	83.57
राहु	21-12-2098	84.56
गुरु	28-03-2101	87.11
शनि	05-12-2103	89.38



केतु (7 वर्ष)

05/12/2103 To 05/12/2110

5th भाव नीच विशेष	वृष राशि रोहि. (4) नक्षत्र	सम संबन्ध भावपति
केतु	03-05-2104	92.07
शुक्र	03-07-2105	92.48
सूर्य	08-11-2105	93.64
चन्द्रमा	09-06-2106	93.99
मंगल	05-11-2106	94.58
राहु	23-11-2107	94.98
गुरु	30-10-2108	96.03
शनि	08-12-2109	96.97
बुध	05-12-2110	98.08



शुक्र (20 वर्ष)

05/12/2110 To 05/12/2130

11th भाव विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	शत्रु संबन्ध 5, 10 भावपति
शुक्र	06-04-2114	99.07
सूर्य	06-04-2115	102.40
चन्द्रमा	05-12-2116	103.40
मंगल	04-02-2118	105.07
राहु	04-02-2121	106.23
गुरु	05-10-2123	109.23
शनि	05-12-2126	111.90
बुध	05-10-2129	115.07
केतु	05-12-2130	117.90

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	05:12:2016 (17:39:34)	05:12:2026 (19:18:58)
अन्तरदशा	बुध	05:10:2022 (23:18:58)	06:03:2024 (05:39:34)
प्रत्यन्तरदशा	गुरु	07:10:2023 (05:43:58)	15:12:2023 (04:23:58)
सूक्ष्मदशा	शुक्र	10:11:2023 (03:16:38)	21:11:2023 (15:03:18)
प्राणदशा	चन्द्रमा	12:11:2023 (15:01:45)	13:11:2023 (14:00:38)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।



सूर्य दशा

15

(11:11:2011 To 05:12:2016)



सूर्य अन्तर

सूर्य	-----	--
चन्द्रमा	-----	--
मंगल	-----	--
राहु	-----	--
गुरु	-----	--
शनि	-----	--
बुध	-----	--
केतु	-----	--
शुक्र	-----	--



चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-----	--
मंगल	-----	--
राहु	-----	--
गुरु	-----	--
शनि	-----	--
बुध	-----	--
केतु	-----	--
शुक्र	-----	--
सूर्य	-----	--



मंगल अन्तर

(11:11:2011 To 29:01:2012)		
मंगल	-----	--
राहु	-----	--
गुरु	-----	--
शनि	26-11-2011	00.00
बुध	14-12-2011	00.04
केतु	22-12-2011	00.09
शुक्र	12-01-2012	00.11
सूर्य	18-01-2012	00.17
चन्द्रमा	29-01-2012	00.19



राहु अन्तर

(29:01:2012 To 24:12:2012)		
राहु	19-03-2012	00.22
गुरु	01-05-2012	00.35
शनि	23-06-2012	00.47
बुध	08-08-2012	00.61
केतु	28-08-2012	00.74
शुक्र	21-10-2012	00.79
सूर्य	07-11-2012	00.94
चन्द्रमा	04-12-2012	00.99
मंगल	24-12-2012	01.06



गुरु अन्तर

(24:12:2012 To 12:10:2013)		
गुरु	31-01-2013	01.12
शनि	19-03-2013	01.22
बुध	29-04-2013	01.35
केतु	16-05-2013	01.46
शुक्र	04-07-2013	01.51
सूर्य	18-07-2013	01.64
चन्द्रमा	12-08-2013	01.68
मंगल	29-08-2013	01.75
राहु	12-10-2013	01.80



शनि अन्तर

(12:10:2013 To 23:09:2014)		
शनि	05-12-2013	01.92
बुध	24-01-2014	02.07
केतु	13-02-2014	02.20
शुक्र	12-04-2014	02.26
सूर्य	29-04-2014	02.42
चन्द्रमा	28-05-2014	02.46
मंगल	17-06-2014	02.54
राहु	08-08-2014	02.60
गुरु	23-09-2014	02.74



बुध अन्तर

(23:09:2014 To 31:07:2015)		
बुध	06-11-2014	02.87
केतु	24-11-2014	02.99
शुक्र	15-01-2015	03.04
सूर्य	31-01-2015	03.18
चन्द्रमा	25-02-2015	03.22
मंगल	16-03-2015	03.29
राहु	01-05-2015	03.34
गुरु	11-06-2015	03.47
शनि	31-07-2015	03.58



केतु अन्तर

(31:07:2015 To 05:12:2015)		
केतु	07-08-2015	03.72
शुक्र	28-08-2015	03.74
सूर्य	04-09-2015	03.80
चन्द्रमा	14-09-2015	03.81
मंगल	22-09-2015	03.84
राहु	11-10-2015	03.86
गुरु	28-10-2015	03.92
शनि	17-11-2015	03.96
बुध	05-12-2015	04.02



शुक्र अन्तर

(05:12:2015 To 05:12:2016)		
शुक्र	04-02-2016	04.07
सूर्य	23-02-2016	04.23
चन्द्रमा	24-03-2016	04.28
मंगल	14-04-2016	04.37
राहु	08-06-2016	04.43
गुरु	27-07-2016	04.58
शनि	23-09-2016	04.71
बुध	14-11-2016	04.87
केतु	05-12-2016	05.01

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



चन्द्रमा दशा

16

(05:12:2016 To 05:12:2026)



चन्द्रमा अन्तर

(05:12:2016 To 05:10:2017)

चन्द्रमा	31-12-2016	05.07
मंगल	17-01-2017	05.14
राहु	04-03-2017	05.18
गुरु	14-04-2017	05.31
शनि	01-06-2017	05.42
बुध	14-07-2017	05.55
केतु	01-08-2017	05.67
शुक्र	20-09-2017	05.72
सूर्य	05-10-2017	05.86



मंगल अन्तर

(05:10:2017 To 06:05:2018)

मंगल	18-10-2017	05.90
राहु	19-11-2017	05.93
गुरु	17-12-2017	06.02
शनि	20-01-2018	06.10
बुध	19-02-2018	06.19
केतु	04-03-2018	06.27
शुक्र	08-04-2018	06.31
सूर्य	19-04-2018	06.41
चन्द्रमा	06-05-2018	06.43



राहु अन्तर

(06:05:2018 To 05:11:2019)

राहु	28-07-2018	06.48
गुरु	09-10-2018	06.71
शनि	03-01-2019	06.91
बुध	22-03-2019	07.15
केतु	23-04-2019	07.36
शुक्र	23-07-2019	07.45
सूर्य	19-08-2019	07.70
चन्द्रमा	04-10-2019	07.77
मंगल	05-11-2019	07.90



गुरु अन्तर

(05:11:2019 To 07:03:2021)

गुरु	09-01-2020	07.98
शनि	26-03-2020	08.16
बुध	03-06-2020	08.37
केतु	02-07-2020	08.56
शुक्र	21-09-2020	08.64
सूर्य	15-10-2020	08.86
चन्द्रमा	25-11-2020	08.93
मंगल	24-12-2020	09.04
राहु	07-03-2021	09.12



शनि अन्तर

(07:03:2021 To 05:10:2022)

शनि	06-06-2021	09.32
बुध	27-08-2021	09.57
केतु	30-09-2021	09.79
शुक्र	04-01-2022	09.88
सूर्य	02-02-2022	10.15
चन्द्रमा	22-03-2022	10.23
मंगल	25-04-2022	10.36
राहु	20-07-2022	10.45
गुरु	05-10-2022	10.69



बुध अन्तर

(05:10:2022 To 06:03:2024)

बुध	18-12-2022	10.90
केतु	17-01-2023	11.10
शुक्र	13-04-2023	11.18
सूर्य	09-05-2023	11.42
चन्द्रमा	21-06-2023	11.49
मंगल	21-07-2023	11.61
राहु	07-10-2023	11.69
गुरु	15-12-2023	11.90
शनि	06-03-2024	12.09



केतु अन्तर

(06:03:2024 To 05:10:2024)

केतु	18-03-2024	12.32
शुक्र	23-04-2024	12.35
सूर्य	03-05-2024	12.45
चन्द्रमा	21-05-2024	12.48
मंगल	03-06-2024	12.53
राहु	05-07-2024	12.56
गुरु	02-08-2024	12.65
शनि	05-09-2024	12.73
बुध	05-10-2024	12.82



शुक्र अन्तर

(05:10:2024 To 06:06:2026)

शुक्र	15-01-2025	12.90
सूर्य	14-02-2025	13.18
चन्द्रमा	06-04-2025	13.26
मंगल	11-05-2025	13.40
राहु	11-08-2025	13.50
गुरु	31-10-2025	13.75
शनि	04-02-2026	13.97
बुध	01-05-2026	14.23
केतु	06-06-2026	14.47



सूर्य अन्तर

(06:06:2026 To 05:12:2026)

सूर्य	15-06-2026	14.57
चन्द्रमा	30-06-2026	14.59
मंगल	11-07-2026	14.63
राहु	07-08-2026	14.66
गुरु	31-08-2026	14.74
शनि	29-09-2026	14.80
बुध	25-10-2026	14.88
केतु	05-11-2026	14.95
शुक्र	05-12-2026	14.98

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



मंगल दशा

17

(05:12:2026 To 05:12:2033)



मंगल अन्तर

(05:12:2026 To 03:05:2027)

मंगल	14-12-2026	15.07
राहु	05-01-2027	15.09
गुरु	25-01-2027	15.15
शनि	18-02-2027	15.21
बुध	11-03-2027	15.27
केतु	20-03-2027	15.33
शुक्र	13-04-2027	15.35
सूर्य	21-04-2027	15.42
चन्द्रमा	03-05-2027	15.44



राहु अन्तर

(03:05:2027 To 21:05:2028)

राहु	30-06-2027	15.48
गुरु	20-08-2027	15.63
शनि	20-10-2027	15.77
बुध	13-12-2027	15.94
केतु	04-01-2028	16.09
शुक्र	08-03-2028	16.15
सूर्य	28-03-2028	16.32
चन्द्रमा	29-04-2028	16.38
मंगल	21-05-2028	16.46



गुरु अन्तर

(21:05:2028 To 27:04:2029)

गुरु	06-07-2028	16.53
शनि	29-08-2028	16.65
बुध	16-10-2028	16.80
केतु	05-11-2028	16.93
शुक्र	01-01-2029	16.98
सूर्य	18-01-2029	17.14
चन्द्रमा	15-02-2029	17.19
मंगल	07-03-2029	17.26
राहु	27-04-2029	17.32



शनि अन्तर

(27:04:2029 To 06:06:2030)

शनि	30-06-2029	17.46
बुध	27-08-2029	17.63
केतु	19-09-2029	17.79
शुक्र	26-11-2029	17.86
सूर्य	16-12-2029	18.04
चन्द्रमा	19-01-2030	18.10
मंगल	11-02-2030	18.19
राहु	13-04-2030	18.25
गुरु	06-06-2030	18.42



बुध अन्तर

(06:06:2030 To 03:06:2031)

बुध	27-07-2030	18.57
केतु	17-08-2030	18.71
शुक्र	17-10-2030	18.77
सूर्य	04-11-2030	18.93
चन्द्रमा	04-12-2030	18.98
मंगल	25-12-2030	19.06
राहु	17-02-2031	19.12
गुरु	06-04-2031	19.27
शनि	03-06-2031	19.40



केतु अन्तर

(03:06:2031 To 30:10:2031)

केतु	11-06-2031	19.56
शुक्र	06-07-2031	19.58
सूर्य	14-07-2031	19.65
चन्द्रमा	26-07-2031	19.67
मंगल	04-08-2031	19.70
राहु	26-08-2031	19.73
गुरु	15-09-2031	19.79
शनि	09-10-2031	19.84
बुध	30-10-2031	19.91



शुक्र अन्तर

(30:10:2031 To 30:12:2032)

शुक्र	09-01-2032	19.97
सूर्य	30-01-2032	20.16
चन्द्रमा	06-03-2032	20.22
मंगल	31-03-2032	20.32
राहु	03-06-2032	20.38
गुरु	30-07-2032	20.56
शनि	05-10-2032	20.72
बुध	05-12-2032	20.90
केतु	30-12-2032	21.07



सूर्य अन्तर

(30:12:2032 To 06:05:2033)

सूर्य	05-01-2033	21.13
चन्द्रमा	16-01-2033	21.15
मंगल	23-01-2033	21.18
राहु	11-02-2033	21.20
गुरु	28-02-2033	21.25
शनि	21-03-2033	21.30
बुध	08-04-2033	21.36
केतु	15-04-2033	21.40
शुक्र	06-05-2033	21.43



चन्द्रमा अन्तर

(06:05:2033 To 05:12:2033)

चन्द्रमा	24-05-2033	21.48
मंगल	06-06-2033	21.53
राहु	07-07-2033	21.57
गुरु	05-08-2033	21.65
शनि	08-09-2033	21.73
बुध	08-10-2033	21.82
केतु	20-10-2033	21.91
शुक्र	25-11-2033	21.94
सूर्य	05-12-2033	22.04

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



राहु दशा

18

(05:12:2033 To 05:12:2051)



राहु अन्तर

(05:12:2033 To 17:08:2036)

राहु	02-05-2034	22.07
गुरु	11-09-2034	22.47
शनि	14-02-2035	22.83
बुध	03-07-2035	23.26
केतु	30-08-2035	23.64
शुक्र	10-02-2036	23.80
सूर्य	30-03-2036	24.25
चन्द्रमा	21-06-2036	24.38
मंगल	17-08-2036	24.61



गुरु अन्तर

(17:08:2036 To 11:01:2039)

गुरु	13-12-2036	24.77
शनि	30-04-2037	25.09
बुध	01-09-2037	25.47
केतु	23-10-2037	25.81
शुक्र	18-03-2038	25.95
सूर्य	30-04-2038	26.35
चन्द्रमा	12-07-2038	26.47
मंगल	01-09-2038	26.67
राहु	11-01-2039	26.81



शनि अन्तर

(11:01:2039 To 17:11:2041)

शनि	25-06-2039	27.17
बुध	19-11-2039	27.62
केतु	19-01-2040	28.02
शुक्र	10-07-2040	28.19
सूर्य	01-09-2040	28.66
चन्द्रमा	27-11-2040	28.81
मंगल	26-01-2041	29.04
राहु	01-07-2041	29.21
गुरु	17-11-2041	29.64



बुध अन्तर

(17:11:2041 To 05:06:2044)

बुध	29-03-2042	30.02
केतु	22-05-2042	30.38
शुक्र	24-10-2042	30.53
सूर्य	10-12-2042	30.95
चन्द्रमा	25-02-2043	31.08
मंगल	21-04-2043	31.29
राहु	07-09-2043	31.44
गुरु	09-01-2044	31.82
शनि	05-06-2044	32.16



केतु अन्तर

(05:06:2044 To 24:06:2045)

केतु	28-06-2044	32.57
शुक्र	31-08-2044	32.63
सूर्य	19-09-2044	32.80
चन्द्रमा	21-10-2044	32.86
मंगल	12-11-2044	32.94
राहु	09-01-2045	33.00
गुरु	01-03-2045	33.16
शनि	01-05-2045	33.30
बुध	24-06-2045	33.47



शुक्र अन्तर

(24:06:2045 To 24:06:2048)

शुक्र	24-12-2045	33.62
सूर्य	16-02-2046	34.12
चन्द्रमा	19-05-2046	34.27
मंगल	21-07-2046	34.52
राहु	02-01-2047	34.69
गुरु	28-05-2047	35.14
शनि	17-11-2047	35.54
बुध	20-04-2048	36.02
केतु	24-06-2048	36.44



सूर्य अन्तर

(24:06:2048 To 19:05:2049)

सूर्य	10-07-2048	36.62
चन्द्रमा	06-08-2048	36.66
मंगल	26-08-2048	36.74
राहु	14-10-2048	36.79
गुरु	27-11-2048	36.92
शनि	18-01-2049	37.04
बुध	06-03-2049	37.19
केतु	25-03-2049	37.31
शुक्र	19-05-2049	37.37



चन्द्रमा अन्तर

(19:05:2049 To 17:11:2050)

चन्द्रमा	03-07-2049	37.52
मंगल	04-08-2049	37.64
राहु	25-10-2049	37.73
गुरु	06-01-2050	37.95
शनि	03-04-2050	38.15
बुध	19-06-2050	38.39
केतु	21-07-2050	38.60
शुक्र	21-10-2050	38.69
सूर्य	17-11-2050	38.94



मंगल अन्तर

(17:11:2050 To 05:12:2051)

मंगल	09-12-2050	39.02
राहु	05-02-2051	39.08
गुरु	28-03-2051	39.24
शनि	28-05-2051	39.38
बुध	21-07-2051	39.54
केतु	12-08-2051	39.69
शुक्र	15-10-2051	39.75
सूर्य	03-11-2051	39.93
चन्द्रमा	05-12-2051	39.98

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



गुरु दशा

19

(05:12:2051 To 05:12:2067)



गुरु अन्तर

(05:12:2051 To 23:01:2054)

गुरु	18-03-2052	40.07
शनि	20-07-2052	40.35
बुध	08-11-2052	40.69
केतु	23-12-2052	40.99
शुक्र	02-05-2053	41.12
सूर्य	10-06-2053	41.47
चन्द्रमा	14-08-2053	41.58
मंगल	28-09-2053	41.76
राहु	23-01-2054	41.88



शनि अन्तर

(23:01:2054 To 05:08:2056)

शनि	18-06-2054	42.20
बुध	27-10-2054	42.60
केतु	20-12-2054	42.96
शुक्र	23-05-2055	43.11
सूर्य	09-07-2055	43.53
चन्द्रमा	24-09-2055	43.66
मंगल	17-11-2055	43.87
राहु	04-04-2056	44.02
गुरु	05-08-2056	44.40



बुध अन्तर

(05:08:2056 To 11:11:2058)

बुध	01-12-2056	44.73
केतु	18-01-2057	45.05
शुक्र	05-06-2057	45.19
सूर्य	16-07-2057	45.56
चन्द्रमा	23-09-2057	45.68
मंगल	11-11-2057	45.87
राहु	15-03-2058	46.00
गुरु	03-07-2058	46.34
शनि	11-11-2058	46.64



केतु अन्तर

(11:11:2058 To 18:10:2059)

केतु	01-12-2058	47.00
शुक्र	27-01-2059	47.05
सूर्य	13-02-2059	47.21
चन्द्रमा	13-03-2059	47.26
मंगल	02-04-2059	47.33
राहु	23-05-2059	47.39
गुरु	07-07-2059	47.53
शनि	30-08-2059	47.65
बुध	18-10-2059	47.80



शुक्र अन्तर

(18:10:2059 To 18:06:2062)

शुक्र	28-03-2060	47.93
सूर्य	16-05-2060	48.38
चन्द्रमा	05-08-2060	48.51
मंगल	01-10-2060	48.73
राहु	24-02-2061	48.89
गुरु	04-07-2061	49.29
शनि	05-12-2061	49.64
बुध	22-04-2062	50.07
केतु	18-06-2062	50.44



सूर्य अन्तर

(18:06:2062 To 06:04:2063)

सूर्य	03-07-2062	50.60
चन्द्रमा	27-07-2062	50.64
मंगल	13-08-2062	50.71
राहु	26-09-2062	50.75
गुरु	04-11-2062	50.87
शनि	20-12-2062	50.98
बुध	30-01-2063	51.11
केतु	16-02-2063	51.22
शुक्र	06-04-2063	51.27



चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2063 To 05:08:2064)

चन्द्रमा	17-05-2063	51.40
मंगल	14-06-2063	51.51
राहु	26-08-2063	51.59
गुरु	30-10-2063	51.79
शनि	15-01-2064	51.97
बुध	24-03-2064	52.18
केतु	22-04-2064	52.37
शुक्र	12-07-2064	52.44
सूर्य	05-08-2064	52.67



मंगल अन्तर

(05:08:2064 To 12:07:2065)

मंगल	25-08-2064	52.73
राहु	15-10-2064	52.79
गुरु	30-11-2064	52.93
शनि	23-01-2065	53.05
बुध	12-03-2065	53.20
केतु	01-04-2065	53.33
शुक्र	28-05-2065	53.39
सूर्य	14-06-2065	53.54
चन्द्रमा	12-07-2065	53.59



राहु अन्तर

(12:07:2065 To 05:12:2067)

राहु	21-11-2065	53.67
गुरु	18-03-2066	54.03
शनि	03-08-2066	54.35
बुध	05-12-2066	54.73
केतु	25-01-2067	55.07
शुक्र	20-06-2067	55.21
सूर्य	03-08-2067	55.61
चन्द्रमा	15-10-2067	55.73
मंगल	05-12-2067	55.93

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शनि दशा

20

(05:12:2067 To 05:12:2086)



शनि अन्तर

(05:12:2067 To 08:12:2070)

शनि	28-05-2068	56.07
बुध	31-10-2068	56.54
केतु	03-01-2069	56.97
शुक्र	05-07-2069	57.14
सूर्य	29-08-2069	57.65
चन्द्रमा	28-11-2069	57.80
मंगल	31-01-2070	58.05
राहु	15-07-2070	58.22
गुरु	08-12-2070	58.67



बुध अन्तर

(08:12:2070 To 18:08:2073)

बुध	27-04-2071	59.08
केतु	23-06-2071	59.46
शुक्र	04-12-2071	59.61
सूर्य	22-01-2072	60.06
चन्द्रमा	13-04-2072	60.20
मंगल	09-06-2072	60.42
राहु	04-11-2072	60.58
गुरु	15-03-2073	60.98
शनि	18-08-2073	61.34



केतु अन्तर

(18:08:2073 To 26:09:2074)

केतु	10-09-2073	61.77
शुक्र	17-11-2073	61.83
सूर्य	07-12-2073	62.02
चन्द्रमा	10-01-2074	62.07
मंगल	02-02-2074	62.16
राहु	04-04-2074	62.23
गुरु	28-05-2074	62.39
शनि	31-07-2074	62.54
बुध	26-09-2074	62.72



शुक्र अन्तर

(26:09:2074 To 26:11:2077)

शुक्र	07-04-2075	62.88
सूर्य	04-06-2075	63.40
चन्द्रमा	08-09-2075	63.56
मंगल	15-11-2075	63.83
राहु	06-05-2076	64.01
गुरु	08-10-2076	64.48
शनि	09-04-2077	64.91
बुध	20-09-2077	65.41
केतु	26-11-2077	65.86



सूर्य अन्तर

(26:11:2077 To 08:11:2078)

सूर्य	14-12-2077	66.04
चन्द्रमा	11-01-2078	66.09
मंगल	01-02-2078	66.17
राहु	25-03-2078	66.22
गुरु	10-05-2078	66.37
शनि	04-07-2078	66.49
बुध	22-08-2078	66.64
केतु	11-09-2078	66.78
शुक्र	08-11-2078	66.83



चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2078 To 08:06:2080)

चन्द्रमा	26-12-2078	66.99
मंगल	29-01-2079	67.12
राहु	25-04-2079	67.22
गुरु	12-07-2079	67.45
शनि	11-10-2079	67.66
बुध	01-01-2080	67.92
केतु	04-02-2080	68.14
शुक्र	10-05-2080	68.23
सूर्य	08-06-2080	68.50



मंगल अन्तर

(08:06:2080 To 18:07:2081)

मंगल	02-07-2080	68.58
राहु	01-09-2080	68.64
गुरु	25-10-2080	68.81
शनि	28-12-2080	68.95
बुध	23-02-2081	69.13
केतु	19-03-2081	69.29
शुक्र	25-05-2081	69.35
सूर्य	15-06-2081	69.54
चन्द्रमा	18-07-2081	69.59



राहु अन्तर

(18:07:2081 To 24:05:2084)

राहु	21-12-2081	69.68
गुरु	09-05-2082	70.11
शनि	21-10-2082	70.49
बुध	17-03-2083	70.94
केतु	17-05-2083	71.35
शुक्र	06-11-2083	71.51
सूर्य	28-12-2083	71.99
चन्द्रमा	24-03-2084	72.13
मंगल	24-05-2084	72.37



गुरु अन्तर

(24:05:2084 To 05:12:2086)

गुरु	25-09-2084	72.53
शनि	18-02-2085	72.87
बुध	29-06-2085	73.27
केतु	22-08-2085	73.63
शुक्र	23-01-2086	73.78
सूर्य	11-03-2086	74.20
चन्द्रमा	27-05-2086	74.33
मंगल	20-07-2086	74.54
राहु	05-12-2086	74.69

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



बुध दशा

21

(05:12:2086 To 05:12:2103)



बुध अन्तर

(05:12:2086 To 03:05:2089)

बुध	09-04-2087	75.07
केतु	30-05-2087	75.41
शुक्र	24-10-2087	75.55
सूर्य	07-12-2087	75.95
चन्द्रमा	18-02-2088	76.07
मंगल	09-04-2088	76.27
राहु	20-08-2088	76.41
गुरु	15-12-2088	76.77
शनि	03-05-2089	77.09



केतु अन्तर

(03:05:2089 To 30:04:2090)

केतु	24-05-2089	77.48
शुक्र	24-07-2089	77.53
सूर्य	11-08-2089	77.70
चन्द्रमा	10-09-2089	77.75
मंगल	01-10-2089	77.83
राहु	24-11-2089	77.89
गुरु	12-01-2090	78.04
शनि	10-03-2090	78.17
बुध	30-04-2090	78.33



शुक्र अन्तर

(30:04:2090 To 28:02:2093)

शुक्र	20-10-2090	78.47
सूर्य	10-12-2090	78.94
चन्द्रमा	07-03-2091	79.08
मंगल	06-05-2091	79.32
राहु	08-10-2091	79.48
गुरु	23-02-2092	79.91
शनि	05-08-2092	80.28
बुध	30-12-2092	80.73
केतु	28-02-2093	81.13



सूर्य अन्तर

(28:02:2093 To 05:01:2094)

सूर्य	16-03-2093	81.30
चन्द्रमा	11-04-2093	81.34
मंगल	29-04-2093	81.41
राहु	14-06-2093	81.46
गुरु	26-07-2093	81.59
शनि	13-09-2093	81.70
बुध	27-10-2093	81.84
केतु	14-11-2093	81.96
शुक्र	05-01-2094	82.01



चन्द्रमा अन्तर

(05:01:2094 To 06:06:2095)

चन्द्रमा	17-02-2094	82.15
मंगल	19-03-2094	82.27
राहु	05-06-2094	82.35
गुरु	12-08-2094	82.56
शनि	02-11-2094	82.75
बुध	15-01-2095	82.98
केतु	14-02-2095	83.18
शुक्र	11-05-2095	83.26
सूर्य	06-06-2095	83.50



मंगल अन्तर

(06:06:2095 To 02:06:2096)

मंगल	27-06-2095	83.57
राहु	20-08-2095	83.62
गुरु	07-10-2095	83.77
शनि	04-12-2095	83.91
बुध	24-01-2096	84.06
केतु	14-02-2096	84.20
शुक्र	15-04-2096	84.26
सूर्य	03-05-2096	84.43
चन्द्रमा	02-06-2096	84.48



राहु अन्तर

(02:06:2096 To 21:12:2098)

राहु	20-10-2096	84.56
गुरु	21-02-2097	84.94
शनि	19-07-2097	85.28
बुध	28-11-2097	85.68
केतु	21-01-2098	86.05
शुक्र	25-06-2098	86.19
सूर्य	11-08-2098	86.62
चन्द्रमा	27-10-2098	86.75
मंगल	21-12-2098	86.96



गुरु अन्तर

(21:12:2098 To 28:03:2101)

गुरु	10-04-2099	87.11
शनि	19-08-2099	87.41
बुध	14-12-2099	87.77
केतु	31-01-2100	88.09
शुक्र	18-06-2100	88.22
सूर्य	30-07-2100	88.60
चन्द्रमा	06-10-2100	88.71
मंगल	24-11-2100	88.90
राहु	28-03-2101	89.04



शनि अन्तर

(28:03:2101 To 05:12:2103)

शनि	30-08-2101	89.38
बुध	17-01-2102	89.80
केतु	15-03-2102	90.18
शुक्र	26-08-2102	90.34
सूर्य	14-10-2102	90.79
चन्द्रमा	04-01-2103	90.92
मंगल	02-03-2103	91.15
राहु	27-07-2103	91.30
गुरु	05-12-2103	91.71

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



केतु दशा

22

(05:12:2103 To 05:12:2110)



केतु अन्तर

(05:12:2103 To 03:05:2104)

केतु	14-12-2103	92.07
शुक्र	08-01-2104	92.09
सूर्य	15-01-2104	92.16
चन्द्रमा	28-01-2104	92.18
मंगल	06-02-2104	92.21
राहु	28-02-2104	92.24
गुरु	19-03-2104	92.30
शनि	12-04-2104	92.35
बुध	03-05-2104	92.42



शुक्र अन्तर

(03:05:2104 To 03:07:2105)

शुक्र	13-07-2104	92.48
सूर्य	03-08-2104	92.67
चन्द्रमा	08-09-2104	92.73
मंगल	03-10-2104	92.83
राहु	06-12-2104	92.89
गुरु	01-02-2105	93.07
शनि	09-04-2105	93.22
बुध	08-06-2105	93.41
केतु	03-07-2105	93.57



सूर्य अन्तर

(03:07:2105 To 08:11:2105)

सूर्य	10-07-2105	93.64
चन्द्रमा	20-07-2105	93.66
मंगल	28-07-2105	93.69
राहु	16-08-2105	93.71
गुरु	02-09-2105	93.76
शनि	22-09-2105	93.81
बुध	10-10-2105	93.86
केतु	18-10-2105	93.91
शुक्र	08-11-2105	93.93



चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2105 To 09:06:2106)

चन्द्रमा	26-11-2105	93.99
मंगल	08-12-2105	94.04
राहु	09-01-2106	94.07
गुरु	06-02-2106	94.16
शनि	12-03-2106	94.24
बुध	11-04-2106	94.33
केतु	24-04-2106	94.41
शुक्र	29-05-2106	94.45
सूर्य	09-06-2106	94.55



मंगल अन्तर

(09:06:2106 To 05:11:2106)

मंगल	18-06-2106	94.58
राहु	10-07-2106	94.60
गुरु	30-07-2106	94.66
शनि	22-08-2106	94.71
बुध	12-09-2106	94.78
केतु	21-09-2106	94.84
शुक्र	16-10-2106	94.86
सूर्य	23-10-2106	94.93
चन्द्रमा	05-11-2106	94.95



राहु अन्तर

(05:11:2106 To 23:11:2107)

राहु	01-01-2107	94.98
गुरु	21-02-2107	95.14
शनि	23-04-2107	95.28
बुध	16-06-2107	95.45
केतु	09-07-2107	95.60
शुक्र	11-09-2107	95.66
सूर्य	30-09-2107	95.83
चन्द्रमा	01-11-2107	95.88
मंगल	23-11-2107	95.97



गुरु अन्तर

(23:11:2107 To 30:10:2108)

गुरु	08-01-2108	96.03
शनि	02-03-2108	96.16
बुध	19-04-2108	96.31
केतु	09-05-2108	96.44
शुक्र	05-07-2108	96.49
सूर्य	22-07-2108	96.65
चन्द्रमा	19-08-2108	96.69
मंगल	08-09-2108	96.77
राहु	30-10-2108	96.83



शनि अन्तर

(30:10:2108 To 08:12:2109)

शनि	02-01-2109	96.97
बुध	28-02-2109	97.14
केतु	24-03-2109	97.30
शुक्र	30-05-2109	97.36
सूर्य	19-06-2109	97.55
चन्द्रमा	23-07-2109	97.60
मंगल	16-08-2109	97.70
राहु	15-10-2109	97.76
गुरु	08-12-2109	97.93



बुध अन्तर

(08:12:2109 To 05:12:2110)

बुध	29-01-2110	98.08
केतु	19-02-2110	98.22
शुक्र	20-04-2110	98.27
सूर्य	08-05-2110	98.44
चन्द्रमा	07-06-2110	98.49
मंगल	28-06-2110	98.57
राहु	22-08-2110	98.63
गुरु	09-10-2110	98.78
शनि	05-12-2110	98.91

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शुक्र दशा

23

(05:12:2110 To 05:12:2130)



शुक्र अन्तर

(05:12:2110 To 06:04:2114)

शुक्र	26-06-2111	99.07
सूर्य	26-08-2111	99.62
चन्द्रमा	05-12-2111	99.79
मंगल	14-02-2112	100.07
राहु	15-08-2112	100.26
गुरु	25-01-2113	100.76
शनि	06-08-2113	101.21
बुध	25-01-2114	101.73
केतु	06-04-2114	102.21



सूर्य अन्तर

(06:04:2114 To 06:04:2115)

सूर्य	24-04-2114	102.40
चन्द्रमा	25-05-2114	102.45
मंगल	15-06-2114	102.53
राहु	09-08-2114	102.59
गुरु	26-09-2114	102.74
शनि	23-11-2114	102.88
बुध	14-01-2115	103.03
केतु	04-02-2115	103.18
शुक्र	06-04-2115	103.23



चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2115 To 05:12:2116)

चन्द्रमा	27-05-2115	103.40
मंगल	01-07-2115	103.54
राहु	30-09-2115	103.64
गुरु	21-12-2115	103.89
शनि	26-03-2116	104.11
बुध	20-06-2116	104.37
केतु	26-07-2116	104.61
शुक्र	05-11-2116	104.71
सूर्य	05-12-2116	104.98



मंगल अन्तर

(05:12:2116 To 04:02:2118)

मंगल	30-12-2116	105.07
राहु	04-03-2117	105.13
गुरु	30-04-2117	105.31
शनि	06-07-2117	105.47
बुध	05-09-2117	105.65
केतु	29-09-2117	105.82
शुक्र	09-12-2117	105.88
सूर्य	31-12-2117	106.08
चन्द्रमा	04-02-2118	106.14



राहु अन्तर

(04:02:2118 To 04:02:2121)

राहु	18-07-2118	106.23
गुरु	11-12-2118	106.68
शनि	03-06-2119	107.08
बुध	05-11-2119	107.56
केतु	08-01-2120	107.98
शुक्र	09-07-2120	108.16
सूर्य	02-09-2120	108.66
चन्द्रमा	02-12-2120	108.81
मंगल	04-02-2121	109.06



गुरु अन्तर

(04:02:2121 To 05:10:2123)

गुरु	14-06-2121	109.23
शनि	15-11-2121	109.59
बुध	02-04-2122	110.01
केतु	29-05-2122	110.39
शुक्र	07-11-2122	110.54
सूर्य	26-12-2122	110.99
चन्द्रमा	17-03-2123	111.12
मंगल	12-05-2123	111.34
राहु	05-10-2123	111.50



शनि अन्तर

(05:10:2123 To 05:12:2126)

शनि	06-04-2124	111.90
बुध	17-09-2124	112.40
केतु	24-11-2124	112.85
शुक्र	04-06-2125	113.03
सूर्य	01-08-2125	113.56
चन्द्रमा	05-11-2125	113.72
मंगल	12-01-2126	113.98
राहु	04-07-2126	114.17
गुरु	05-12-2126	114.64



बुध अन्तर

(05:12:2126 To 05:10:2129)

बुध	01-05-2127	115.07
केतु	30-06-2127	115.47
शुक्र	19-12-2127	115.63
सूर्य	09-02-2128	116.11
चन्द्रमा	06-05-2128	116.25
मंगल	05-07-2128	116.48
राहु	08-12-2128	116.65
गुरु	25-04-2129	117.07
शनि	05-10-2129	117.45



केतु अन्तर

(05:10:2129 To 05:12:2130)

केतु	30-10-2129	117.90
शुक्र	09-01-2130	117.97
सूर्य	31-01-2130	118.16
चन्द्रमा	07-03-2130	118.22
मंगल	01-04-2130	118.32
राहु	04-06-2130	118.39
गुरु	31-07-2130	118.56
शनि	06-10-2130	118.72
बुध	05-12-2130	118.90

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



कुण्डली में प्राप्त दोषों का विवेचन और उपाय

लाल किताब ज्योतिष में, जीवन की चुनौतियों से निपटने और सफलता पाने के लिए कुण्डली में स्थित महत्वपूर्ण दोषों या विकारों की पहचान करना और उनका समाधान करना आवश्यक है। ये दोष, जिनमें पितृ ऋण, अंधा टेवा, आधा अंधा टेवा, मांगलिक दोष और काल सर्प दोष शामिल हैं, किसी के जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वास्थ्य, वित्त, रिश्ते और सामान्य भलाई पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। इन दोषों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए उनके उपचार की तलाश करना महत्वपूर्ण है। उपचार विशिष्ट अनुष्ठानों, प्रार्थना करने, दान करने, रत्न पहनने से लेकर जीवनशैली में बदलाव लाने तक हो सकते हैं। ये उपचारात्मक उपाय ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने, बाधाओं को दूर करने और अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन का मार्ग बनाने में मदद कर सकते हैं।



कुण्डली में लागू होने वाले पितृ ऋण

यदि पूर्वजों में से किसी ने कोई बुरा या पाप कर्म किया है, तो यह पितृ ऋण में बदल जाता है और इसे परिवार के किसी सदस्य द्वारा चुकाया जाना चाहिए। इसीलिए उन्हें कष्ट होता है। कभीकभी, हम अपने बड़ों के पापों से अविश्वसनीय और आश्चर्यजनक तरीके से रहस्यमय तरीके से प्रभावित होते हैं। निहितार्थ यह है कि अपराध कोई और करता है, और जुर्माना कोई और व्यक्ति भरता है। पैतृक ऋण के मामले में अक्सर सज़ा किसी करीबी रिश्तेदार को भुगतनी पड़ती है। पितृ ऋण का विचार जन्म कुण्डली से किया जाता है। एक बार ऋण की पहचान हो जाने पर उसका निवारण भी किसी रक्त संबंधी को ही करना पड़ता है। पैतृक ऋण का भुगतान किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है। रक्त संबंधियों में बहनें, बेटियाँ और उनके बच्चे जैसे पोते, भतीजे, भतीजी आदि शामिल हैं। लाल किताब के अनुसार मनुष्य नौ ग्रहों के आधार पर नौ प्रकार के ऋण लेता है। इनमें आत्मऋण, मातृऋण, पारिवारिक ऋण, बहन/बेटी का ऋण, पितृऋण, स्त्रीऋण, निर्दयताऋण, जीवन भर का ऋण और दैवीय ऋण शामिल हैं।



जालीमाना ऋण

कुण्डली में सूर्य दसवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में जालीमाना ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

जालीमाना ऋण के कारण -

किसी की अकारण जान ले लेना या किसी के घर पर जबरदस्ती कब्जा कर लेना इस ऋण के मुख्य कारण है। घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में होगा या ऐसे व्यक्ति का घर उस जगह पर बना होगा, जो अनाथालय के लिए आरक्षित की गई हो या घर सड़क की जमीन पर अथवा कुएं के उपर बना हुआ होगा।

जालीमाना ऋण के लक्षण -

ऐसे में परिवार में बुरी घटनायें होती हैं। किसी दुर्घटनाओं के वजह से अंग-भंग भी हो जाता है अथवा आंख की बरौनियों या भौहों के बाल अचानक ही झड़ने लगते हैं।

जालीमाना ऋण के उपाय -

- 1— अपने परिवार के सारे सदस्यों के बराबर मात्रा में धन लेकर एक ही दिन में 100 मजदूरों को भोजन कराएँ।
- 2— 100 तालाबों से मछलियाँ लेकर उन्हें दाना डालें।
- 3— 43 दिन तक कौओं को रोटी खिलायें।



आपकी कुण्डली में मांगलीक दोष और उसका निवारण

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है, जिसके कारण आप मांगलिक जातक हैं।

आठवें भाव में स्थित मंगल का दाम्पत्य जीवन पर प्रभाव —

आप मेहनती होंगी, मेहनत से कामयाबी का फल मिले या न मिले, इसकी चिंता न होगी। शत्रु चाहे कितना भी बलवान हो, उसका मुकाबला करने की ताकत आप में होगी। आप बहुत ज्यादा आदर्शवादी और आलसी हो सकती हैं। आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी। माता बचपन में गुजर जायें या वह दुःखी रहें। शत्रु का हमला रोकने की ताकत होगी। माता के पेट में आते ही ताया—मामा, बड़े भाई को कष्ट—परेशानी होगी। अच्छी सेहत, लम्बी आयु और समृद्धि होगी। लम्बी बीमारियों का भय रहेगा। छोटा भाई 4—8 वर्ष के अन्तर में होगा या 13—15 वर्ष का भी अन्तर हो सकता है या छोटा भाई न होगा।

दाम्पत्य जीवन में खुशहाली और मांगलिक दोष के निवारण के लिए आपको निम्न बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए —

आपको विधुर पुरुष या विधवा स्त्री के साथ लड़ाई—झगड़ा नहीं करना है। अपने घर में जमीन के अन्दर तन्दूर या भट्ठी नहीं बनवानी है। विधुर पुरुष या विधवा स्त्री की बददुआ नहीं लें। अपने पास चाकू—छुरी या कोई धारदार हथियार न रखें। तोता—मैना न पालें।

यदि आपके जीवन में निम्न घटनायें या लक्षण स्पष्ट दिखायी दे रहे हैं, तो समझ लेना चाहिए कि आपको मांगलिक दोष का अशुभ परिणाम प्राप्त हो रहा है —

यदि आपके छोटे भाई को कोई असाध्य बीमारी लग जाये या उसका खून खराब और बाजूओं में कष्ट होने लगे। आपकी माता को स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं का सामना करना पड़े।

मांगलिक दोष के निवारण के लिए निम्नलिखित उपाय करें —

गले में चांदी की चैन पहनें। विधवा स्त्री को बर्फी खिलायें और उसका आशीर्वाद लें। तन्दूर में पकी मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलाती रहें। रोटी पकाने से पहले जब तवा गर्म हो जाए तो उस पर पानी के छींटे देकर रोटी पकायें।

मांगलिक दोष के निवारण के लिए विशेष उपाय —

तांबे या सोने की अंगुठी में मूंगा जड़वा कर पहनें।

यहां कुछ सरल उपाय दिए जा रहे हैं, जो दाम्पत्य जीवन में व्याप्त समस्याओं के निवारण में कुछ सीमा तक सहायक हो सकते हैं।

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए, प्रदोष के दिन गुड़ का शिव लिंग बना कर विधिपूर्वक पूजा करें और प्रतिदिन शिव के बीज मंत्र की एक माला का जाप करें, निःसंदेह चमत्कार अनुभव करेंगी। दाम्पत्य जीवन मधुर बना रहेगा।

दाम्पत्य सुख की प्राप्ति के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रातः काल पीपल के पास तिल्ली के तेल का दीपक जलायें तथा शनिवार और मंगलवार को सायंकाल अपने जीवनसाथी के साथ हनुमान जी के मंदिर जायें, प्रसाद चढ़ायें एवं मनोभाव से दाम्पत्य सुख की प्रार्थना करें। धीरे—धीरे सुख का अनुभव

करेंगी।

यदि पति—पत्नी के मध्य वाक् युद्ध होता रहता है तो जिस व्यक्ति के कारण कलह होता हो उसे बुधवार के दिन कुछ समय के लिए (दो घंटे के लिए) मौन व्रत धारण करना चाहिए।

यदि पति—पत्नी के मध्य परस्पर सामंजस्य एवं सहयोग की भावना का अभाव हो तो उन्हें गुरुवार को साथ—साथ राम—सीता मंदिर या लक्ष्मीनारायण मंदिर जाकर भगवान को पुष्प एवं प्रसाद चढ़ाने चाहिए तथा प्रेम का वातावरण घर में बना रहे ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए और प्रसाद का भोग लगाकर मंदिर में बांटना चाहिए।

पति को चाहिए कि वह शुक्रवार को अपनी जीवन संगिनी को सुंदर पुष्प या इत्र की शीशी भेंट करे तथा उसके साथ सफेद मिठाई खाये।

घर के वातावरण को सुखमय बनाए रखने के लिए घर में गमले में सुगंधित व सुंदर पुष्प के पौधे लगाने चाहिए। बड़े कमरे में कृत्रिम सुंदर पुष्प युक्त गमले सजा कर रखें।

शयन कक्ष में गमले में मोर पंख सजाकर इस प्रकार रखें कि वे कमरे के बाहर से दृष्टिगोचर न हों किंतु पति—पत्नी को पलंग से नजर आते रहें।

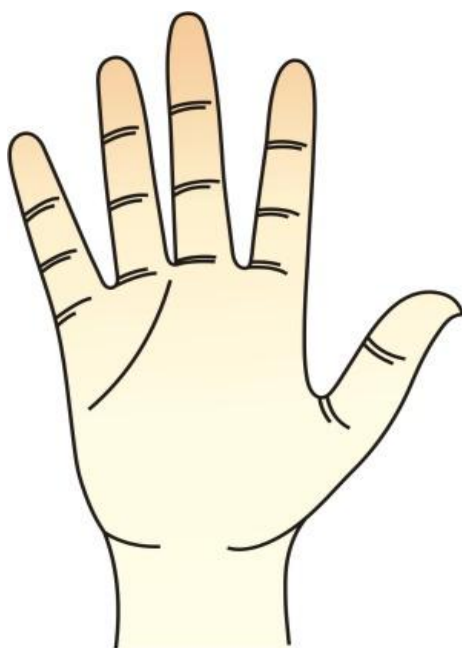


कुण्डली में ग्रहों का प्रभाव और उपाय

हमारे सौर मंडल में खगोलीय पिंड, विशेष रूप से ग्रह, लाल किताब के अनुसार आपके जीवन को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो हिंदू ज्योतिष और हस्तरेखा विज्ञान पर उर्दू भाषा की पांच पुस्तकों का एक क्रम है। ये ब्रह्मांडीय संस्थाएं आपके व्यक्तित्व, कार्यों, सफलताओं और चुनौतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं, जो आपके जीवन पथ को गहराई से आकार देती हैं। लाल किताब इन ग्रहों के प्रभावों के बारे में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान करती है और किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए व्यावहारिक उपाय प्रदान करती है। लाल किताब में दिए गए नुस्खे पालन करने में सरल हैं और इसमें जटिल अनुष्ठान शामिल नहीं हैं, जिससे वे सभी के लिए सुलभ हो जाते हैं। इन दिशानिर्देशों का पालन करके, आप ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित करने, अपने जीवन में संतुलन हासिल करने और इस प्रक्रिया में अपनी क्षमता की अनुभूति करने का प्रयास कर सकते हैं।



कुण्डली में सूर्य देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको सूर्य का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(11/11/2040 से 10/11/2042 तक, 11/11/2075 से 10/11/2077 तक,
11/11/2110 से 10/11/2112 तक)

आपकी कुण्डली में सूर्य दसवें भाव में स्थित है। आपमें एक नेतृत्वकर्ता के गुण विद्यमान होंगे और आप न्यायप्रिय होंगे। आप किसी संस्था के प्रमुख, नेता या न्यायाधीश हो सकते हैं। आप ईमानदार होंगे और किसी को धोखा नहीं देंगे। चाहे आप सरकारी विभाग या निजी संस्थान में नौकरी करें या व्यापार करें, आपको धन, नाम और यश प्राप्त होगा। आपको नौकरों का सुख प्राप्त होगा। सरकार से आपको लाभ प्राप्त होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप किसी चीज पर जल्दी विश्वास नहीं करेंगे और बहुत शक्की होंगे। आपको संतान का बहुत सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। 19 साल की आयु में आपको अपने पिता से अलग होना पड़ सकता है। आपके परिवार का कोई व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करेगा या किसी संस्था का प्रमुख होगा और उन्हें सरकार से सम्मान प्राप्त होगा।

आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा एवं आपके पास धन-संपत्ति भी होगी। समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी। आपके बाल जितने जल्दी सफेद होंगे, उतनी जल्दी आपको शुभ फल मिलना शुरू होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में आपको सफलता प्राप्त होगी। यदि आप राजनीति में सक्रिय हैं तो आपको जीत प्राप्त हो सकती है।

आपको सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

अपनी गुप्त बातें किसी और को न बतायें। अपने सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़ने दें। अपने सिर पर हमेशा सफेद या शरबती रंग की टोपी या पगड़ी पहनें। काला या नीला कपड़ा न पहनें। मांस-मदिरा से दूर रहें। मकान, लोहा-मशीनरी, लकड़ी आदि का काम न करें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी सूर्य के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

मुंह में हरदम थुक आये। घर में अग्निकांड हों। अगर बचपन में पिता का साया सिर पर ना रहे। अगर हर कार्य में बुजदिली आडे आये। मुकदमों आदि पर ज्यादा खर्च होने लगे। शरीर के अंगों में हरकत करने या कराने की ताकत खत्म होने या कम होने लगे।

यदि आपके घर का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में हुआ, आपने अपना सिर नंगा रखा या अपने राज को किसी और को बताया तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में सूर्य के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका सूर्य किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु तक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप लकड़ी, लोहा, काली चीजों, भैंस या मशीनरी से सम्बन्धित कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको उसमें हानि हो सकती है। आपको पैतृक सम्पत्ति नहीं प्राप्त हो सकती है। आपके पिता का सुख कम हो सकता है। आपको घुटनों में दर्द हो सकता है और आपकी आँखें कमजोर हो सकती हैं। यदि आप अपनी पत्नी के घर पर रहते हैं या बिजली अथवा कोयले से सम्बन्धित कोई व्यवसाय अपने ससुराल वालों के साथ करते हैं तो आपको उसमें हानि हो सकती है। आपको अपने ससुराल में नहीं रहना चाहिए या ससुराल बहुत नहीं जाना चाहिए। आपको सरकार के कारण कोई परेशानी हो सकती है। आप कुछ वहमी स्वभाव वाले हो सकते हैं। आप अक्सर किसी उलझन में फंसे रह सकते हैं। आपको संतान का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको अपने घर की मशीनरी, आपके घुटने, लकड़ी आदि के कारोबार पर अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपको बहुत ज्यादा पैतृक संपत्ति प्राप्त नहीं हो सकती है।

आपको अपनी समस्याओं को दूसरों के सामने उजागर नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपको और अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने घर की पश्चिमी दीवार को तोड़कर रोशनी की व्यवस्था नहीं करनी चाहिए। आपका कोई पड़ोसी पुत्र सुख से वंचित हो सकता है या उसके घर में कोई काना हो सकता है। इसका अशुभ प्रभाव आप पर एवं आपकी संतान पर पड़ सकता है। उपाय के तौर पर सफेद या शरबती रंग की पगड़ी या टोपी पहनें। नीले कपड़ों से दूर रहें। आप अपने बुजुर्गों से झगड़ा कर सकते हैं। आपके परिवार की आर्थिक स्थिति निरंतर खराब हो सकती है। पुलिस विभाग या बिजली विभाग में काम करने से तरक्की नहीं हो सकती है। मशीनरी, भैंस या तेल से संबंधित काम करने से हानि हो सकती है।

आपको सूर्य के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

बहते हुए पानी में तांबे का पैसा बहायें। शिलाजीत जल में प्रवाहित करें। भूरी भैंस पालें। अपने पैतृक मकान

में हैण्डपंप लगवायें। नेवला पालें। रविवार का व्रत रखें। घर का आंगन खुला रखें। हरिवंश पुराण की कथा सुनें।

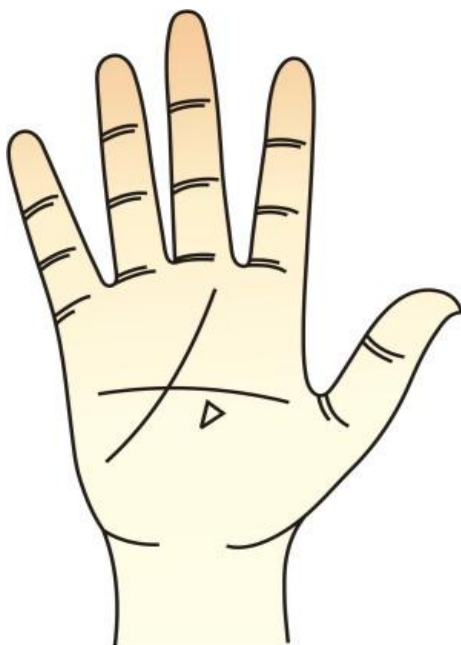
कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में सूर्य के साथ बैठे ग्रहों या सूर्य पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।



कुण्डली में चन्द्रमा देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको चन्द्रमा का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2042 से 10/11/2043 तक, 11/11/2077 से 10/11/2078 तक,
11/11/2112 से 10/11/2113 तक)**

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा चौथे भाव में स्थित है। आपका भाग्य चमकेगा। आप धनी होंगे और आपको भूमि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी। आपको वाहन का सुख भी मिलेगा। आप एक राजा के समान रहेंगे। आपको पैतृक व्यापार से लाभ प्राप्त होगा। कपड़े का व्यापार आपके लिये लाभदायक होगा। आपको माता-पिता का बहुत उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विदेश यात्रा पर जायेंगे और उसका सारा खर्च सरकार देगी। आपको भारी मात्रा में धन प्राप्त होगा। जितना आप खर्च करेंगे, वह उतना ही बढ़ेगा। यदि आप अपनी माता की सेवा करेंगे और जरूरतमंद लोगों की मदद करेंगे तो आपका धन कई गुना बढ़ेगा। आप दीर्घायु होंगे। यदि कोई अपनी सम्पत्ति आपके पास गिरवी रखता/रखती है तो वह उसे वापस लेने नहीं आयेगा/आयेगी। आपके पुत्र के जन्म के बाद आपकी स्थिति में सुधार होगा।

आपके जीवन के उत्तरार्ध का समय आराम व खुशियों से पूर्ण होगा। चंद्रमा के शुभ फलों में वृद्धि के लिए

मिट्टी के बर्तन में दूध भरकर अपने घर में रखें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं या सरकारी ठेकेदारी करते हैं तो आपको उत्तम आय अर्जित होगा। आपको समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त होगा। आपकी माता और पत्नी आपकी मदद करेंगी। आपको अपना पैतृक व्यापार जारी रखना चाहिये और किसी अन्य व्यापार को नहीं करना चाहिये। यदि आप कोई नया व्यापार करते हैं तो उसमें आपको हानि होने की संभावना है। आप न्यायाधीश हो सकते हैं। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। लेकिन कोई काम प्रारम्भ करने से पहले आपको दूसरों से सलाह नहीं लेनी चाहिये। यह आपके परिवार के लिये हानिकारक हो सकता है। अपने घर आये मेहमानों को पानी की जगह दूध पिलायें। अपनी माता तथा माता समान अन्य स्त्रियों के पैर छूकर आशीर्वाद लेते रहें, आपके सुख के साधन में बढ़ोतरी होगी। आप सम्मानीय होंगे। आपको अपने माता-पिता, जीवनसाथी तथा पुत्र का भरपूर सुख प्राप्त होगा। आप मुसीबतों से नहीं घबरायेंगे, बल्कि उसका डटकर मुकाबला करेंगे। आप बहुत साफ दिल वाले होंगे एवं अपने परिवार का ख्याल रखेंगे। आप बहुत हिम्मती होंगे। आप जिसका पक्ष लेंगे, उसकी जीत निश्चित ही होगी।

आपको चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

अपनी माता का विरोध न करें। दूध का व्यापार नहीं करें। शुभ कार्य पर जाने से पहले घर में दूध या पानी से भरा हुआ कुंभ स्थापित करें। घर की छत के नीचे कुआं या हैण्डपंप न रखें। मेहमानों से सेवा के बदले में धन या कोई सामान न लें। दूध या पानी पीने के लिए चांदी का गिलास प्रयोग करें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी चन्द्रमा के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

ननिहाल की स्थिती ठीक ना हो। शादी या औलाद से संबंधित परेशानी हो। मूत्र संबंधित बीमारी लग जाये। महसूस करने की ताकत खत्म हो जाये। दुध देने वाले जानवर मर जायें।

यदि आप दूध या पानी का व्यापार करते हैं, अपनी माता या वृद्ध महिला के साथ झगड़ा करते हैं, अपने पूर्वजों के व्यवसाय को बदलते हैं या अतिथियों की सेवा नहीं करते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में चन्द्रमा के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है और इस कारण से आप अपनी माता को परेशान करते हैं और उनका विरोध करते हैं तो आपका धन घट सकता है और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपकी पैतृक सम्पत्ति समाप्त हो सकती है। आप किसी वाहन दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। यदि आप अपने पूर्वजों के व्यवसाय को बदलते हैं तो आपको हानि हो सकती है। डेयरी से संबंधित व्यापार आपके लिये लाभकारी नहीं हो सकता है। आपको संतान सुख भी नहीं मिल सकता है।

आपके मन में कभी-कभी बुरे विचार आ सकते हैं। दायें हाथ में बिना जोड़ का चांदी का कड़ा पहनना आपके लिए लाभदायक होगा। आपको प्राप्त होने वाले गृहस्थ सुख में कमी हो सकती है। आप अपने जीवन में सुखों से वंचित रह सकते हैं। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है या माता से आपका झगड़ा हो सकता है। आप किसी का एहसान नहीं मानेंगे। आप अपने पुश्तैनी कारोबार को छोड़ सकते हैं। आपको दूध नहीं बेचना चाहिए, अन्यथा आपकी बर्बादी हो सकती है तथा आप पर झूठा आरोप लग सकता है।

आपको चन्द्रमा के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

कोई नया काम शुरू करने से पहले दूध या पानी से भरकर बर्तन रखें। अतिथियों को दूध या मीठा

पानी/शर्बत दें। मंदिर में दूध का दान करें। शिव जी की पूजा करें। गंगा स्नान करें। अपने घर में यज्ञ या पूजा करते रहें। अपने पोते या दोहते के साथ मंदिर जायें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

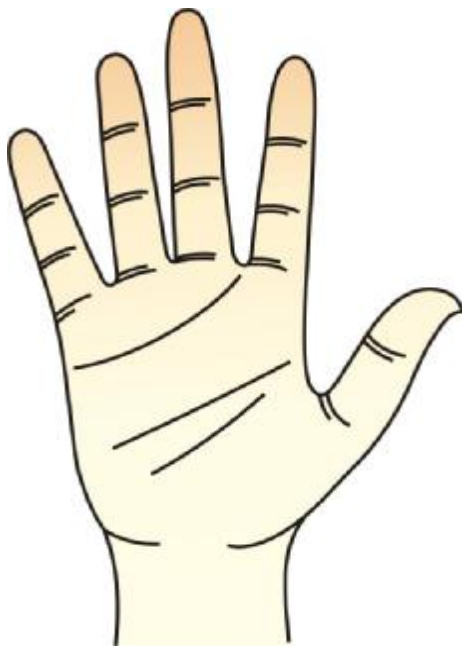
आपकी कुण्डली में चन्द्रमा के साथ बैठे ग्रहों या चन्द्रमा पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। आप साफ-सुथरी छवि वाले सभ्य व्यक्ति होंगे एवं बड़े खानदान से संबंधित होने के सारे गुण आपमें मौजूद होंगे।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और बृहस्पति एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह युति वट वृक्ष एवं न्यायपालिका कहलाती है। ये दोनों ही शुभ ग्रह हैं, अतः इन दोनों ग्रहों की युति शुभ फल देने वाली होती है। यह एक उत्तम योग है। आपके जन्म से ही आपके घर में धन का आगमन प्रारम्भ हो गया होगा। चन्द्रमा और बृहस्पति से सम्बन्धित चीजों और सम्बन्धियों की मदद से आपके यहां धन की वृद्धि होती रहेगी।



कुण्डली में मंगल देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको मंगल का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2011 से 10/11/2017 तक, 11/11/2046 से 10/11/2052 तक,
11/11/2081 से 10/11/2087 तक)**

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार आप मांगलिक हैं। यदि आप विवाहित हैं तो, मंगलवार के दिन पति-पत्नी स्नान करें, फिर लाल वस्त्र पहनकर तांबे का पात्र चावल से भरकर उस पर लाल चंदन का तिलक लगाकर रखें। एक माला गायत्री मंत्र का जाप करके वह पात्र हनुमान मंदिर में देकर आयें। सात मंगलवार यह उपाय करना है। आपको अपने माता-पिता का पूरा

सहयोग प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आप निडर और उत्साही होंगे। परिणामों की परवाह किये बिना आप चुनौतियों का मुकाबला करेंगे।

आप न्याय पाने के लिये लड़ाई करने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप अपने काम में गहरी रुचि लेंगे और उसे पूरे मन से करेंगे। भगवान आपका जीवन बुरी घटनाओं से बचायेगा। आप बाधाओं का मुकाबला चिन्तित हुये बिना करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आप हिम्मती होंगे। नतीजा हार हो या जीत, आप मुकाबला जरूर करेंगे। आपकी तरक्की धीरे-धीरे होगी। आपको लॉटरी या किसी निःसंतान की संपत्ति से धन लाभ हो सकता है।

आपको मंगल के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

अपने घर पर जमीन के नीचे कोई भट्ठी न रखें। तोता न पालें। किसी विधवा स्त्री की सेवा करें एवं उनका आर्शीवाद लें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी मंगल के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

आंख में परेशानी हो या कोई खराबी हो। संतान पैदा होते ही खत्म हो जाये। भाई-भतीजे की अचानक मौत हो जाये। ननिहाल या ससुराल में अचानक परेशानीयां खड़ी होने लगे। चोरी या डकैती के मुकदमें में फँस जायें और सजा हो जाये। एकाएक गरीबी आ जाये। औलाद पैदा होने में परेशानी हो।

यदि आप विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करेंगे, हर समय अपने पास चाकू रखेंगे, लोगों के साथ झगड़ा करेंगे, आपके घर पर जमीन के नीचे कोई भट्ठी हुई तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में मंगल के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके छोटे भाई को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उसके कारण झगड़ा हो सकता है। घर में गेहूँ का आटा केवल सोमवार, या शनिवार को ही पिसवाएं। पिसवाने से पहले उसमें 100 ग्राम काले चने डाल दें। इस प्रकार का आटा खाने से धीरे-धीरे लड़ाई-झगड़ा तथा घर में क्लेश खत्म हो जाएंगे। आपके भाइयों का जीवन परेशानियों से भरा हो सकता है। आपका भाई आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। किसी अचानक दुर्घटना के कारण आपको कोई रक्त संबंधी विकार हो सकता है या कोई नाखून संबंधी रोग हो सकता है। किसी व्यक्ति पर बिना किसी कारण क्रोध करना आपके लिये पश्चाताप का कारण बन सकता है। आपको हानि भी हो सकती है। कोई आप पर आक्रमण कर सकता है।

किसी श्मशान, दरगाह, भड़भूँजे की दुकान के आस-पास घर न बनायें, अशुभ फलों की प्राप्ति होगी। आपके जीवन में हर चौथा एवं आठवां वर्ष परेशानियों वाला हो सकता है। यदि आपका छोटा भाई आपसे 4 या 8 वर्ष से ज्यादा छोटा है तो उन्हें मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपका छोटा भाई आपका विरोध कर सकता है या निकम्मा हो सकता है। यदि आपके घर की जमीन के अंदर भट्ठी, तंदूर या जली हुई राख हो तो, इस मकान में रहना आपके लिए अशुभ हो सकता है। आपके कुछ पारिवारिक सदस्यों को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या असामयिक मृत्यु हो सकती है। आप किसी विधवा स्त्री से झगड़ा न करें, विधवा के श्राप के फलस्वरूप भाग्य आपका साथ छोड़ सकता है।

आपकी शादी 28 वर्ष की आयु के बाद हो सकती है। कई मामलों में आपको अपने परिवार के विरोध का

सामना करना पड़ सकता है। यदि आप जुड़वां भाई हैं तो छोटे भाई को परिवार का विरोध सहना पड़ सकता है। यदि आपके घर की चारदीवारी के अंदर जमीन खोदकर कोई भट्ठी या तंदूर बनाई गई है तो आपको काफी अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि ऐसी भट्ठी पर अपनी संतान के विवाह के अवसर पर खाना पकाया तो आपकी संतान को औलाद का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको तंदूर में मीठी रोटी बनाकर 43 दिनों तक कुत्तों को खिलाना चाहिए।

आपको मंगल के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

विधवा का आशीर्वाद लें। 8 मीठी एवं तंदूर में सेंकी रोटियां कुत्तों को खिलायें। गले में हमेशा चांदी की चेन पहनें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में मंगल के साथ बैठे ग्रहों या मंगल पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

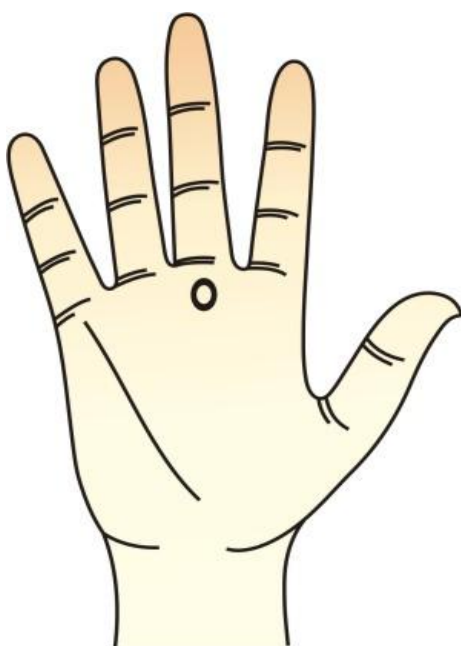
आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है एवं दूसरा भाव खाली है या उसमें चंद्रमा अथवा बृहस्पति स्थित है। आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। आपके बिगड़े काम बन सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में एवं चंद्रमा पहले, तीसरे, चौथे, आठवें या नौवें भाव में स्थित है। यदि मंगल किसी कारण से अशुभ भी हो रहा है तो भी आपको शुभ फल की प्राप्ति होगी।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके पिता को कुछ अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। आपकी आंखों में खराबी एवं जोड़ों में दर्द हो सकता है। आपके मित्र शत्रु बन सकते हैं। 28 से 36 वर्ष तक की उम्र में आपके छोटे भाई आपके लिए कई प्रकार की परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। आपको अपने घर में तंदूर नहीं बनाना चाहिए।



कुण्डली में बुध देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको बुध का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(11/11/2017 से 10/11/2019 तक, 11/11/2052 से 10/11/2054 तक,
11/11/2087 से 10/11/2089 तक)

आपकी कुण्डली में बुध ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपको चरित्रवान संतान प्राप्त होगी। उसका विवाह उच्च स्तर के परिवार में होगा। पहला, 23वॉ, 33वॉ, 36वॉ, 44वॉ, 57वॉ, 73वॉ, 84वॉ और 94वॉ साल आपकी आयु के शुभ और लाभकारी होंगे। आप प्रतिभावान और शर्मिले प्रकृति के होंगे। आप 34 साल की आयु के बाद एक अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे। मित्रता आपके लिये लाभदायक नहीं हो सकती है सोच-समझ के दोस्त बनायें। आपको विदेशी व्यापार से लाभ प्राप्त होगा। आपको सरकार से लाभ और सम्मान प्राप्त होगा। आपको चित्रकारी, कला, अध्यापन या कानून संबंधी व्यवसाय से लाभ प्राप्त होगा।

आप अपने दिमाग के प्रयोग द्वारा लाभ और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। आपके माता, पिता, चाचा को अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। 34 वर्ष की आयु के बाद आपका भाग्योदय होगा तथा आपको शुभ फल प्राप्त होना शुरू हो जाएगा। आप काफी फुर्तीले, तेज दिमाग वाले तथा बातों के धनी होंगे। आप अपनी बातों से दूसरों को फंसाकर अपना काम निकलवा सकते हैं। आप ज्योतिष, कलम के काम या किसी हुनरमंदी से धनोपार्जन कर सकते हैं। चालाकी से काम निकालना आपके लिए मददगार होगा।

आपको बुध के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

हरे रंग का प्रयोग न करें। साधु-फकीर से गंडे, ताबीज न लें। खाली बर्तन को ढक कर न रखें। चौड़े पत्ते वाले पौधे घर में न लगायें। तुलसी की माला न रखें। पीतल के बर्तन बंद न रखें। दुनियावीस साधु-महात्मा की मूर्तियां या चित्र आदि न रखें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी बुध के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

सुंघने की शक्ति खत्म हो जाये। सामने के दांत झड़ जायें। सीढ़ियों से गिरकर हाथ-पांव तुड़वा बैठें। बहन, बुआ, मौसी, साली या अपनी बेटी की हालत ठीक ना हो। कोई आपको धोखा दे दे। अपनी औलाद से परेशानी हो जाये।

यदि आप बुरे काम करेंगे, किसी साधु से ताबीज या धागा लेंगे, आपके घर पर चीड़ का वृक्ष हुआ तो आपका बुध कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में बुध के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो 39 साल की आयु के दौरान शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपकी बहन के पति धनी परिवार से होंगे, लेकिन आपकी बहन उनके कारण दुःखी रहेंगी। आपकी संतान को परेशानी हो सकती है। आप पैर, कान और जोड़ों के रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी 34 वर्ष की आयु तक आपके अधिकतर काम सफल नहीं होंगे। आप कुछ मूर्खता वाले काम भी कर सकते हैं। आपका धन-दौलत बर्बाद हो सकता है एवं मन बेचैन रहेगा। आपके सम्मान में भी कमी हो सकती है। बहुत मेहनत करने के बावजूद आपको मानसिक शांति प्राप्त नहीं होगी। यदि आपको बुध से संबंधित कोई अशुभ असर प्राप्त हो रहा है तो गले में तांबे का सिक्का पहनें। आप मूर्खतापूर्ण कार्य करके स्वयं ही धन हानि करा लेंगे। हालांकि आपको अपनी गलती पता होगी, लेकिन आप स्वीकार नहीं

करेंगे। आपको साधु-फकीरों की संगति अच्छी लग सकती है तथा आप उनके दिए ताबीज, धागा, भभूति आदि अपने पास रखेंगे जो कि आपको बर्बाद कर सकता है। आपको कभी-कभी पागलपन के दौरें पड़ सकते हैं। आपकी बहन, बुआ, साली एवं लड़की को कष्ट हो सकते हैं। घर में मनी प्लांट, बेलदार पौधे, तुलसी आदि न लगायें। अण्डा से परहेज करें, अशुभ फल प्राप्त हो सकता है।

आपको बुध के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

लोहे की गोली अपने पास रखें। गले में तांबे का सिक्का सफेद धागे में पिरोकर पहनें। अपनी बहन एवं बेटा की सेवा करें। फिटकरी का प्रयोग करें। नाक छेदन करवायें। बुधवार का व्रत करें। घर में दुर्गा पाठ करवायें। लाल कंठी वाले तोते को चूरी खिलायें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में बुध के साथ बैठे ग्रहों या बुध पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में बुध ग्यारहवें भाव में स्थित है तथा दूसरा भाव खाली है। आप किसी हुनर में माहिर होंगे एवं शर्मीले होंगे। समाज में आपकी इज्जत होगी।

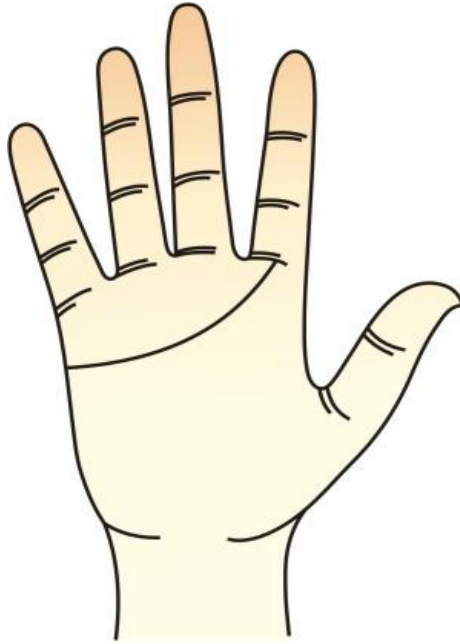
आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र एक साथ ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। आप समृद्धशाली होंगे। यदि इस युति पर अन्य ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है तो आपको शुक्र का शुभ फल मिलेगा। इन दोनों ग्रहों की अवधि समान होती है और ये दोनों शक्तिशाली ग्रह हैं। ये दोनों 44 वर्ष की आयु तक साथ रहते हैं। आप धनी होंगे, लेकिन आपकी नौकरी में स्थिरता का अभाव हो सकता है। आप अर्ध सरकारी नौकरी कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको इस भाव के अनुसार दोनों ग्रहों के शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको मिट्टी, कपास, न्यायालय से सम्बन्धित कामों में सफलता मिलेगी। यदि ये दोनों ग्रह अशुभ हैं तो आपको अपने भाई-बहनों से दूर रहना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। इसके साथ, यदि आठवें भाव में मंगल-शनि की युति है तो शनि की आयु (9, 18, 38) में आपके घर में आग लग सकती है, जिसमें दूध देने वाला कोई पशु जल कर मर सकता है।

आपकी कुण्डली में बुध और राहु एक साथ ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। इस युति के कारण चन्द्रमा और बृहस्पति का प्रभाव प्रायः मन्दा होता है। यह युति चन्द्रमा और बृहस्पति के मिलने वाले परिणामों से आपको वंचित कर सकती है। आपके जीवन में बाधाएँ आ सकती हैं। यदि यह युति अशुभ है तो आपकी बहन या पुत्री के विवाह के बाद सात दिन या सात माह या सात वर्ष में उसका तलाक हो सकता है। उपाय - यदि आपके घर के पश्चिम दिशा में ऊपरी भाग में रसोई घर है तो उसे बहन या पुत्री के विवाह से पहले हटाकर दूसरी जगह बनवा लें। पश्चिम दिशा में दीवार के पास स्थित चूल्हा, भट्ठी, स्टोव आदि को वहाँ से हटा दें अथवा आप इनके सामने एक दीवार भी बनवा सकते हैं। चन्द्रमा से सम्बन्धित चीजें श्मशान में जमीन में दबा दें। श्मशान का जल लाकर घर में स्थापित करें। मिट्टी की सौ गोलियाँ बनाकर रोज उसे किसी धर्म स्थान में जाकर सौ दिनों तक रखें। इस प्रयोग को भंग न होने दें। यदि कभी बाहर जाना पड़े तो यह प्रयोग वहाँ पर भी करते रहें। आपकी बहन धनी होगी, लेकिन उनका गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। आपकी बहन के पति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या उनका तलाक हो सकता है। अशुभ असर को दूर करने के लिए लोहे का बेजोड़ छल्ला धारण करें।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध, राहु और शुक्र की त्रिग्रही युति किसी भाव में है, आप एक से अधिक विवाह कर सकते हैं, लेकिन फिर भी आपको वैवाहिक सुख नहीं प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है।



कुण्डली में गुरु देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको गुरु का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2034 से 10/11/2040 तक, 11/11/2069 से 10/11/2075 तक,
11/11/2104 से 10/11/2110 तक)**

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। आप वकील या जज हो सकते हैं या एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आप जो भी सोचेंगे, वह सच हो जायेगा। आप दूसरों की मदद करते समय अपने नुकसान के बारे में नहीं सोचेंगे। आपको अचानक धन मिल सकता है या आपकी लॉटरी लग सकती है। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपको 24 साल की आयु तक शिक्षा प्राप्त होगी। आप बहुत चतुर और भाग्यशाली होंगे। आप सबकी मदद करेंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से अधिक उँचा होगा। आप आधिकारिक यात्राओं के दौरान शुभ परिणाम प्राप्त करेंगे। आपके माता-पिता दीर्घायु होंगे। आप यश प्राप्त करेंगे। आपको भूमि प्राप्त होगी और आपका घर आलीशान होगा। आप खुश रहेंगे और आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी।

आपको जीवनसाथी, संतान और माता-पिता का सुख प्राप्त होगा। आपको गड़ा हुआ खजाना प्राप्त हो सकता है। लोहे, मशीन आदि से संबंधित कोई व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद के स्वामी होंगे। धन आपके पास खुद-व-खुद आता रहेगा। आपको जीवनसाथी, संतान एवं माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपका जन्म किसी धर्म स्थान के आस पास हो सकता है। आप क्रांतिकारी विचारों वाले हो सकते हैं। आपको पालतू पशुओं एवं वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की अचानक तरक्की होगी। आपके पिता दीर्घायु होंगे एवं आपके पिता के काम का संबंध न्यायालय से हो सकता है। आपको किसी निःसंतान की संपत्ति प्राप्त हो सकती है या किसी की अमानत आपके पास रह सकती है। आप चरित्रवान होंगे। आपके जीवनसाथी उत्तम स्वभाव वाली होंगी। अपनी संतान से आपको सुख प्राप्त होगा।

**आपको गुरु के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न
परहेज करना चाहिए -**

आपको अपने घर में मंदिर का निर्माण नहीं करना चाहिए। निःसंतान व्यक्ति के साथ संबंध न रखें। दूसरों के सामने नहीं नहायें। दूसरों के सामने अपने शरीर को नंगा न रखें। टूटे हुए या चिपकाये हुए या खराब खिलौने न रखें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी गुरु के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

किसी कारणवश शिक्षा में रुकावट आ जाये। सोना खो जाये या चोरी हो जाये। चोटी रखने वाले स्थान पर का बाल गिरने लगे। गलत इल्जाम लगने लगे। दिमागी कार्यों में मन ना लगे। गले में माला पहनने का मन करे।

यदि आपके संबंध गरीबों के साथ हुये, आपने घर पर टूटी हुई चीजें या चिपकाये हुये खिलौने रखे, पराई औरतों के साथ संबंध रखे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में गुरु के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप स्वयं को बर्बाद कर सकते हैं। 23वॉ, 34वॉ, 48वॉ और 55वॉ साल आपके जीवन का उत्तम होगा, लेकिन आपकी माता को इन सालों के दौरान परेशानी हो सकती है। आप बदनाम हो सकते हैं या आपका मान दांव पर लग सकता है। आपको किसी बड़ी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप सांसारिक बन्धन से छुटकारा पाने के बारे में सोच सकते हैं। आपकी पत्नी को छाती या गर्भाशय से संबंधित कोई रोग हो सकता है। आप मांस-मदिरा का सेवन कर सकते हैं। आप अपनी माता का विरोध कर सकते हैं। वाहन दुर्घटना की भी संभावना है। आप अपना काम खुद बिगाड़ सकते हैं। आपको प्राप्त होने वाले गृहस्थ सुख में कमी हो सकती है। आपको धन संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गंदे इश्क के चक्कर में पड़कर आपका जीवन बर्बाद हो सकता है। अपने से बड़ों की बातों को मानने से आपका कुछ फायदा हो सकता है।

आपको गुरु के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

बड़ों की सेवा करें। सांप को दूध पिलायें। अपने बनियान पर लाल निशान लगाकर पहनें। धार्मिक स्थानों की यात्रा करें और पूजा करें। कुलपुरोहित का आशीर्वाद लें। पीपल का पेड़ लगायें। अपना चरित्र साफ रखें। बुजुर्गों की सेवा करें। घर की दीवार पर पीला पेंट लगायें। टाई लगायें या गोल गले की बनियान पहनें। दस दिन बहते पानी में गोल गले की बनियान पहन कर स्नान करें।

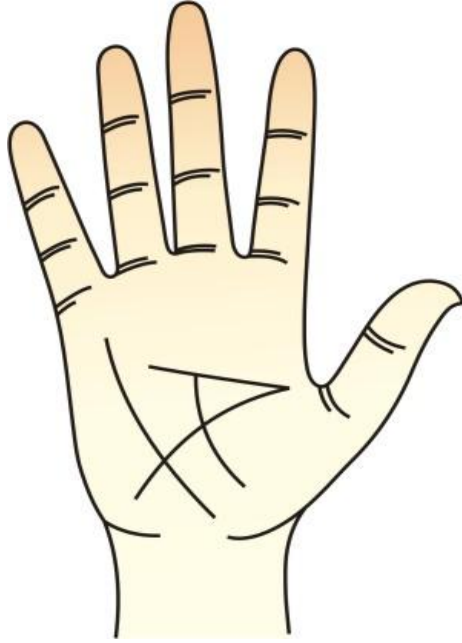
कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में गुरु के साथ बैठे ग्रहों या गुरु पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में एवं शनि नौवें भाव में स्थित है। आप सबको तारने वाले हो सकते हैं।



कुण्डली में शुक्र देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको शुक्र का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2043 से 10/11/2046 तक, 11/11/2078 से 10/11/2081 तक,
11/11/2113 से 10/11/2116 तक)**

आपकी कुण्डली में शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपकी पुत्रियों की संख्या पुत्रों से अधिक होगी। आपकी पत्नी मासूम होंगी और उनका स्वभाव उत्तम होगा। वह घरेलू कामों में दक्ष होंगी। विवाह के बाद आप बहुत धन कमायेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति देर से हो सकती है। आपके ससुराल वाले आपकी मदद करेंगे और आपको उनसे लाभ प्राप्त होगा। आप और आपकी पत्नी में काम-वासना सामान्य होगी। आप धन कमाने में व्यस्त रहेंगे। आप सद्गुणी होंगे। आप गुप्त रूप से काम करेंगे। आप अपनी विचारधारा शीघ्र बदल देंगे, इसका आपके धन पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपकी पत्नी देखने में मासूम लेकिन अंदर से कठोर हो सकती हैं। आपको अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ सकता है।

आप भोले-भाले होंगे, लेकिन आप पैसे को अधिक महत्व दे सकते हैं एवं पैसे के पीछे भागेंगे। यदि आपके पुत्र का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह रहा है तो सरसों के तेल का दान करें या काले कपड़े में काली उड़द बांध कर तेल मांगने वाले को दान करें। आप अपने घर के मालिक होंगे। आपकी पत्नी आपसे दबकर रहेंगी। आपके घर में स्त्रियों की संख्या अधिक हो सकती है। आप बहुत सारी गुप्त बातें अपने दिल में छुपा कर रखेंगे। आपको ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि जैसी गुप्त विद्या में रुचि हो सकती है।

आपको शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

अप्राकृतिक काम-वासना में न पड़ें। अतिकामी या कामांध न बनें। अपना पहनावा ठीक रखें। अपनी पत्नी को अपने घर का खजांची न बनायें। अपना व्यवसाय बार-बार न बदलें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी शुक्र के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

पराई स्त्री से संबंध बन जाये। बिना बीमारी के अंगुठा सुन्न पड़ जाये। जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो

जाये या उसे कोई दिमागी बीमारी लग जाये। खांसते वक्त मुंह से खून आये। सास बहु में लगातार झगड़ा हो।

यदि आप परिवार के मुखिया हुये, सद्मार्ग से भटके, अप्राकृतिक रूप से यौन संबंध बनाये, कोई पाप किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में शुक्र के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी कामशक्ति कमजोर हो सकती है। आपके वीर्य में खराबी हो सकती है या आपमें बच्चे पैदा करने की शक्ति कम हो सकती है। आपको किसी निपुण आयुर्वेदाचार्य या डाक्टर से परामर्श करना चाहिये और मछली के तेल का सेवन करना चाहिये। आपकी पत्नी आपके धन को बढ़ाने या उसकी बचत करने में सक्षम नहीं होंगी। वे आपके धन को बर्बाद कर सकती हैं या आपको उनके कारण धन हानि हो सकती है। आपको दण्ड या कारावास हो सकता है। आपका व्यवहार संशयपूर्ण हो सकता है। कभी-कभी आप मूर्खतापूर्ण काम करेंगे। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। औरतों के साथ आपका अक्सर विवाद हो सकता है। उनके साथ आपकी पटरी नहीं बैठ सकती है। अपने भाई-बंधुओं के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। कन्या संतान की तुलना में आपको पुत्र संतान अधिक हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकती है।

आपको शुक्र के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

दही या रूई मंदिर में दान करें। सरसों का तेल पानी में बहायें या मंदिर में दान करें। सोना का भस्म खायें। विवाह के वक्त गाय का दान करें। मछली का तेल खायें। शुक्रवार का व्रत रखें। घर में आये हुए मेहमानों को भोजन करायें। कपिला गाय पालें या उसकी सेवा करें। दूध या दूध से बनी चीजों का सेवन करें। अपनी पत्नी से सरसों का तेल दान करने को कहें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में शुक्र के साथ बैठे ग्रहों या शुक्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में कोई ग्रह स्थित है। आपके तीन साले हो सकते हैं, जो कि आपकी मदद करते रहेंगे।

आपकी कुण्डली में बुध या चंद्रमा उच्चस्थ है या अपने पक्के भावों में स्थित है। आप अपनी विचारधारा जल्दी-जल्दी बदलते रह सकते हैं तथा आप गुप्त कार्य करने के आदि हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

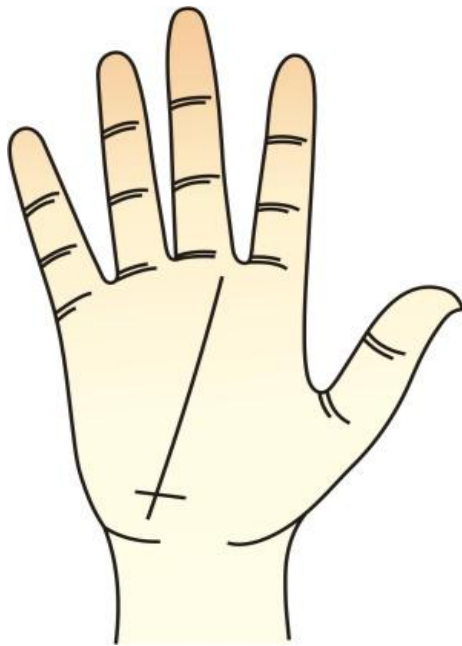
आपकी कुण्डली में तीसरा भाव खाली है। आपकी पारिवारिक स्थिति ज्यादा ठीक नहीं हो सकती है। यदि आपको वीर्य से संबंधित कोई बीमारी है तो आपको मछली के तेल का सेवन करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र और राहु एक साथ ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस युति के कारण शुक्र के दो हिस्सों बुध और केतु में से एक हिस्सा शेष रहता है। यह युति गुदा के आसपास के क्षेत्र पर प्रभाव डालती है। आपको जीवनसाथी और धन के सम्बन्ध में यह युति इस भाव के अनुसार परिणाम देगी। आप ज्ञानी और अनुभवी होंगे। आपको सम्मान प्राप्त होगा। यदि आप दक्षिणमुखी मकान में रहेंगे तो आपको शुक्र के सभी प्रकार के अशुभ प्रभाव मिल सकते हैं। परिवार की महिलाओं को अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। उनको मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है। अशुभता को दूर करने के लिए आपको चन्द्रमा के उपाय करने चाहिए। आप घर में शुद्ध चांदी रखें। आपको तिजोरी में सूर्य या मंगल से सम्बन्धित वस्तुएं

रखनी चाहिए। इस युति के अशुभ होने पर राहु के अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप नाखून काटने के बजाय उनको बढ़ाना शुरू कर सकते हैं और उन्हें नेल पॉलिश से रंग सकते हैं। आप बात करते समय मुंह का प्रयोग कम और आंखों का प्रयोग अधिक कर सकते हैं। आपको 42 वर्ष की आयु तक दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी रातों की नींद गायब हो सकती है। आपको चन्द्रमा और शुक्र का संयुक्त उपाय करना चाहिए। दूध में मक्खन डाल कर उसे धर्म स्थान में दान कर दें। आप नारियल दान में दें। आपके जीवनसाथी को आपने दायें हाथ में बिना जोड़ की अंगूठी पहननी चाहिए।



कुण्डली में शनि देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको शनि का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2019 से 10/11/2025 तक, 11/11/2054 से 10/11/2060 तक,
11/11/2089 से 10/11/2095 तक)**

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है। आप परोपकारी होंगे और लोगों की मदद करेंगे। इस कारण से आपको लाभ प्राप्त होंगे। आपके पास बहुत सम्पत्ति होगी। आपका संबंध कुलीन और बड़े परिवार से होगा। आप अपने भाई और मित्रों की मदद से धनी बनेंगे। आप बहुत धन कमायेंगे। चलते फिरते काम आपके लिये लाभकारी होंगे। आपको संतान सुख प्राप्त होगा, लेकिन आपको संतान प्राप्ति देर से हो सकती है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होंगी। वे भाग्यशाली भी होंगी। आप अपने धन की परवाह नहीं करेंगे। आप दयालु होंगे और हमेशा खुश रहेंगे। आप पर कर्ज का बोझ कभी नहीं होगा। आपको माता-पिता का सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप अपने माता-पिता से अधिक भाग्यशाली होंगे। तीर्थयात्रा से आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे और आपका भाग्य चमकेगा। आप धार्मिक होंगे। यदि आप परोपकार वाले कार्य करेंगे तो आपको काफी शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपको अपने घर के अंधेरे कमरे के अंदर रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं बनवानी चाहिए, अन्यथा आपका सारा धन नष्ट हो सकता है। आप ऊँचे स्तर की शिक्षा प्राप्त करेंगे। आपके मकान के आंगन में पत्थर का प्रयोग हुआ होगा। शराब का सेवन अधिक अशुभ फल नहीं देगा, हालाँकि सेवन न करें तो उत्तम होगा। ज्योतिष एवं विज्ञान में आपकी रुचि हो सकती है। आप कानून के अच्छे जानकार होंगे। वाद-विवाद में आपकी विजय होगी। सत्ता पक्ष या सरकारी अधिकारियों से आप लाभ एवं सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

आपसे परिवार की तरक्की होगी। आपमें दूर-दृष्टि होगी। मकानों से संबंधित काम, सरकारी नौकरी, सोने का काम, ज्योतिष आदि के काम से आपको धन लाभ होगा।

आपको शनि के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

अपने नाम पर तीन से अधिक मकान न बनवायें। मांस, मछली, मदिरा का सेवन न करें। शीशम का पेड़ न लगायें। घर की छत पर ईंधन, चौखट आदि जमा न करें। झूठ न बोलें।

निम्न शारीरिक/परिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी शनि के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

एकाएक मकान ढह जाये। अचानक घर में दुध देने वाला पशु मर जाये। घर में अगलगी की घटनाएं होने लगे। चमड़े का जुता/चप्पल खो जाये। छोटा भाई दुश्मनी करने लगे। परिवार के किसी व्यक्ति की लड़ाई-झगड़े में मौत हो जाये। नशा करने की लत पड़ जाये। धोखे से पैसा कमाना शुरू कर दें। जमीन जायदाद का नुकसान होने लगे। बुढ़ापा गरीबी में कटने लगे। कोई लाइलाज बीमारी लग जाये।

यदि आप दूसरों का धन हड़पने का प्रयास करेंगे, गलत काम करेंगे, अपने नाम पर तीन घर बनायेंगे, लोहे या मशीनरी से संबंधित किसी काम में शामिल होंगे या आपके घर में शीशम का पेड़ हुआ तो आपका शनि कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में शनि के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप दमा या फेफड़े के रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको संतान का सुख नहीं मिलेगा या आपको पुत्र या पौत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपको साहूकारी के व्यापार में हानि हो सकती है। आग के कारण आपको हानि हो सकती है। गलत कामों के कारण आप बदनाम हो सकते हैं। आपकी नजर कमजोर हो सकती है। आप अमीरों को लूट कर गरीबों में धन बांट देंगे। आपमें प्रतिशोध की भावना हो सकती है। यदि आपकी 36वें वर्ष की आयु के दौरान आपकी पत्नी गर्भवती हैं और आप मकान बनाना शुरू करते हैं तो आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपको अपने मकान की छत पर ईंधन, चौखट, लकड़ी का सामान आदि नहीं रखना चाहिए, अशुभ फल प्राप्त होंगे।

आपकी नजर कमजोर हो सकती है एवं संतान सुख में कमी हो सकती है। आपके परिवार में किसी को दिमाग से संबंधित कोई बीमारी हो सकती है या किसी के सिर में चोट लग सकती है। घर की छत पर टूटा फर्नीचर न रखें। अपने घर की अंधेरी कोठरी में रोशनी की व्यवस्था करने के लिए तोड़-फोड़ न करें, अन्यथा तीन वर्ष के अंदर आपका सारा धन बर्बाद हो सकता है। घर में स्त्री के गर्भवती होने के दौरान मकान बनवाना शुरू न करें, परिवार के किसी सदस्य की असामयिक मौत हो सकती है या मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपके सर एवं पैरों में कुछ अधिक बाल हो सकते हैं।

आपको शनि के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

बहते हुए पानी में चावल या बादाम प्रवाहित करें। सोने-चांदी एवं कपड़ों से संबंधित कारोबार आपके लिए लाभदायक होगा। घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी जरूर बनवायें। केसर का तिलक लगायें। भैरों मंदिर में शराब दान करें। काली भैंस पालें। सांप को दूध पिलायें। तेल/शराब का दान करें। घर के अंदर पत्थर गाड़ें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में शनि के साथ बैठे ग्रहों या शनि पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में एवं चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। आपकी किस्मत बुलंद होगी। आपके जीवनसाथी अमीर खानदान से होंगे एवं काफी भाग्यवान होंगे।

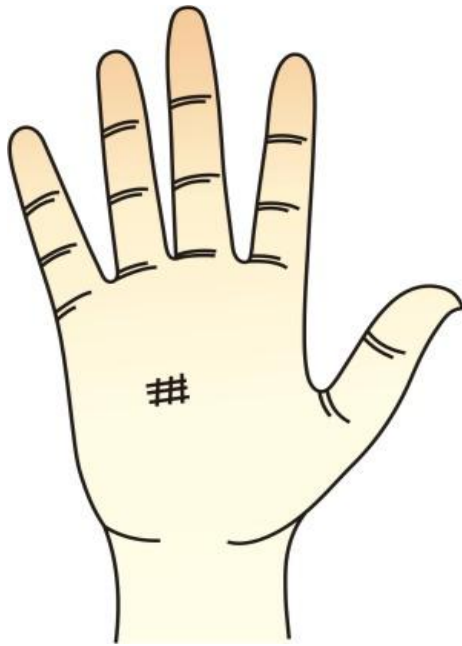
आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है, दूसरा भाव खाली है एवं शनि पर राहु या केतु की दृष्टि पड़ रही है। आप कुछ दुष्ट स्वभाव वाले हो सकते हैं, लेकिन भाग्यशाली होंगे। आप दूसरों का धन हड़प सकते हैं। आपको साहूकारी नहीं करनी चाहिए, अन्यथा आप धन एवं औलाद के लिए तरस सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है एवं दूसरा भाव खाली है। आपको शनि का अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। आपकी जिंदगी कष्टमय हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है एवं शनि पर राहु या केतु की दृष्टि पड़ रही है। यदि आप धन का लेन-देन करते हैं तो आप निर्धन हो सकते हैं और आपकी औलाद की पैदाईश में भी रुकावटें पैदा हो सकती हैं।



कुण्डली में राहु देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको राहु का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

**(11/11/2025 से 10/11/2031 तक, 11/11/2060 से 10/11/2066 तक,
11/11/2095 से 10/11/2101 तक)**

आपकी कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपका बचपन खुशहाल होगा। आपको एक उच्च शैक्षणिक संस्थान में पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा। आपको अपने पिता से सुख प्राप्त होगा। आप अपने जीवन में अपने माता-पिता की सहायता के बिना प्रगति करेंगे। आप मजबूत और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी आय के द्वारा अपना जीवन व्यतीत करेंगे। अपने माता-पिता के साथ आपके मधुर संबंध कटु हो सकते हैं। आप विदेश यात्रा से धन प्राप्त करेंगे। यदि आपने दूसरों पर विश्वास किया तो आपको धोखा मिल सकता है। आपके पिता या

दादा को अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। आपके जन्म के बाद आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप सदा सतर्क रहने वाले होंगे। आपको अपने दोस्तों का साथ प्राप्त होता रहेगा।

आप अनैतिक तरीके से या नीच किस्म के लोगों से धन प्राप्त कर सकते हैं। धोखा, ठगी या छल-कपट से अर्जित धन आपको बरकत देगा। आपका भाग्योदय आपके पिता की मृत्यु के बाद हो सकता है। आपको पुश्तैनी संपत्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती है, लेकिन आप स्वयं धनोपार्जन में सक्षम होंगे। कोर्ट-कचहरी के मामले में आपको सफलता प्राप्त होगी। आप जिसका पक्ष लेंगे, उसकी विजय होगी। आप सच्चाई पसंद व्यक्ति होंगे। आप धन के लिए किसी के सामने हाथ नहीं फैलायेंगे।

आपको राहु के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए -

बिना इस्तेमाल किये हुए बर्तनों को ढक कर न रखें। नीलम धारण न करें। हाथी के शकल के खिलौने न खरीदें। किसी को भेंट में बिजली का सामान न दें। बृहस्पतिवार के दिन प्याज, लहसुन आदि न खायें। दहेज में बिजली का सामान न लें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी राहु के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

अचानक ही परिवार के बड़ों में लड़ाई-झगड़ा होने लगे। मकान की छत बदलवानी पड़े। काला कुत्ता खो जाये। धर्म और धार्मिक कार्यों का विरोध करने लगे। पेट के रोगी हो जायें। तलाक की नौबत आ जाये। ठीक-ठाक चलता कारोबार अचानक ठप्प पड़ जाये। दर-दर भटकने की नौबत आ जाये। रात को नीद ना आये। बुरी आदतों पर पैसा खर्च होने लगे। जीवनसाथी का गर्भपात हो जाये।

यदि आपने अपने पास पिस्तौल रखी, नीलम पहना, घर पर गैरजरूरत का बिजली का सामान या तार रखा, तिजोरी या दराज खाली रखी तो आपका राहु कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में राहु के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके पिता को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अपने पिता की मृत्यु के बाद आपको हानि हो सकती है। आप बुरे लोगों की संगति कर सकते हैं। आप गलत तरीकों से धन कमायेंगे। गुप्तांगों में रोग के कारण आपकी समस्यायें बढ़ सकती हैं। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपको युवावस्था में गरीबी का सामना करना पड़ सकता है। अपने दादा और पिता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है। आप अपने काम में निपुण होंगे और चालाक लोगों की संगति करेंगे। आप बेकार के झगड़ों में पड़ सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आपकी 11 महीने या 11 वर्ष या 21 वर्ष की आयु के दौरान आपके पिता को कष्ट हो सकता है। आपकी पुश्तैनी संपत्ति एवं ससुराल के धन में कमी हो सकती है। आपका सोना चोरी हो सकता है या गुम हो सकता है।

आप फालतू के खर्च कर सकते हैं। आप, आपका पुत्र एवं आपके पिता तीनों एक साथ खुश नहीं रह सकते हैं। तीनों में से किसी को - खास कर पिता को - मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए शरीर पर सोना पहनें। भंगी को पैसा दान करना भी लाभदायक होगा। आपके पुत्र के कान में कोई समस्या हो सकती है। आपकी टांगों एवं रीढ़ की हड्डी में दर्द हो सकता है। यात्रा के समय सावधानी बरतें, अन्यथा हानि हो सकती है। आपके पिता एवं ससुर को अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप एवं आपके पिता में से किसी एक पर ही भाग्य मेहरबान हो सकता है। ईमानदारी एवं सच्चाई से अर्जित धन से कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता है। कोर्ट-कचहरी के मामले में आपको नुकसान हो सकता है। आपको सजा या जुर्माना

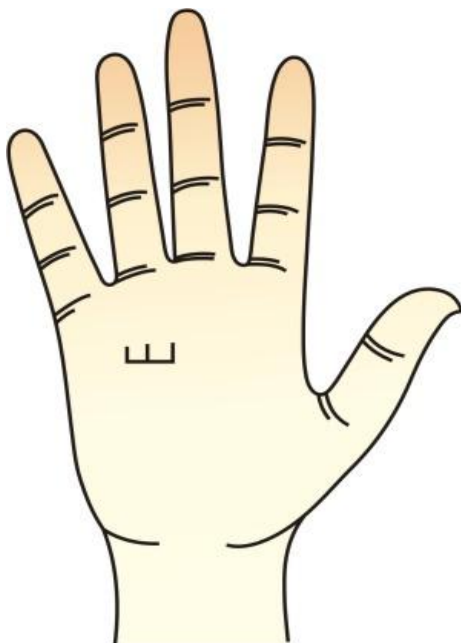
भी हो सकता है। आपको नीले एवं काले कपड़े पसंद हो सकते हैं। सरकारी अधिकारियों या विभागों के कारण धन हानि हो सकती है।

आपको राहु के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

शरीर पर सोना धारण करें। केसर का तिलक लगायें। चांदी के गिलास से दूध या पानी पीयें। बृहस्पतिवार के दिन चने की दान पीले कपड़े में बांधकर दान करें। यदि आप सिगरेट पीते हैं तो चांदी की टोटी में सिगरेट पीयें। अपने घर के बिजली का सामान ठीक रखें। नीले कपड़े नहीं पहनें। घर में या पास में हथियार न रखें। 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा एवं 4 श्री फल नदी में प्रवाहित करें। सिर पर चोटी रखें। धर्म स्थान में कुछ न कुछ दान देते रहें। सफाई कर्मचारी को कुछ पैसे देते रहें। बायें हाथ की कनिष्ठका या मध्यमा अंगुली में बेजोड़ स्टेनलेस स्टील की अंगूठी पहनें।



कुण्डली में केतु देव का प्रभाव और उपाय



निम्न समयावधि में आपको केतु का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(11/11/2031 से 10/11/2034 तक, 11/11/2066 से 10/11/2069 तक,
11/11/2101 से 10/11/2104 तक)

आपकी कुण्डली में केतु पॉचवें भाव में स्थित है। आपको अचानक धन प्राप्त हो सकता है। आपके पास अद्भुत अलौकिक शक्ति होगी। आप अपने गुरु के भक्त होंगे। 24 साल की आयु के बाद आपको उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको 34 साल के दौरान अपने पुत्र और उसके बाद पौत्र से सुख प्राप्त होगा। आपको 48वें साल की आयु तक अपनी माता का सुख प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आप जीवन में सद्मार्ग का अनुसरण करके खुश रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपके पुत्र के जन्म के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में और सुधार होगा। आपको अपनी इच्छा के अनुसार संतान प्राप्त होगी। यदि आपने अपना चाल-चलन ठीक रखा तो आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपको केतु के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न

परहेज करना चाहिए -

खराब चाल-चलन वाले लोगों से दूर रहें। लोहे के सन्दूक में ताला न लगायें। उसे जब तब खोलते रहें। घर के लॉकर या ताले बहुत देर तक बन्द न रखें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी केतु के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

औलाद को सांस से संबंधित बीमारी लग जाये। शुगर (मधुमेह) की बीमारी हो जाये। औलाद की पैदाइश में परेशानी हो। जोड़ों का दर्द परेशान करे। दीवानी मुकदमे में पैसा खर्च हो। कुत्तों से डर लगने लगे। मकान की छत गिर जाये। भाई की तरफ से परेशानी हो। अचानक ही फोड़े-फुंसी से परेशान हो जायें।

यदि आपने अपना चरित्र खराब किया, अपने या किसी और के पुत्र के लिये परेशानी पैदा की, कुत्ते को मारा तो आपका केतु कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में केतु के उपाय अवश्य करना चाहिए -

यदि आपका केतु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको अपने पुत्र का बहुत सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आपका समय आपकी 45 साल की आयु तक उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी संतान को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको दमा या श्वसन संबंधित कोई रोग हो सकता है। आपको कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बुरे लोगों की संगति में पड़ सकते हैं। आपका पुत्र आपकी माता के लिये अशुभ हो सकता है। आप निराश एवं हताश होंगे। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। आपको जुए या लाटरी की वजह से धन हानि हो सकती है। आपका गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। आप गलत संगति में पड़ सकते हैं। आपकी संतान को दमा या सांस से संबंधित बीमारी हो सकती है। संतान पर शुभ प्रभाव के लिए ससुराल से चारपाई अवश्य लें।

आपको केतु के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए -

चावल, दूध, गुड़ इत्यादि दान करें। तिल, नींबू, केला आदि दान करें या जल प्रवाह करें। खट्टी चीजें नौ वर्ष से छोटी कन्याओं को खिलायें। अपने गुरु एवं बुजुर्गों की सेवा करें एवं उनका आशीर्वाद लेते रहें। पानी में चीनी डालकर सूर्य को अर्घ्य दें। ससुराल से चारपाई लें। चितकबरे कुत्ते की सेवा करें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय -

आपकी कुण्डली में केतु के साथ बैठे ग्रहों या केतु पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में केतु पांचवें भाव में स्थित है तथा सूर्य, चंद्रमा या बृहस्पति चौथे, छठे या बारहवें भाव में स्थित हैं। आपको कन्या संतान की तुलना में पुत्र संतान अधिक होंगे एवं आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

आपकी कुण्डली में केतु पांचवें भाव में तथा चंद्रमा या मंगल तीसरे या चौथे भाव में स्थित है। आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपके सोचने की शक्ति का ह्रास हो सकता है। आपके विचारों में स्पष्टता नहीं हो सकती है। अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए चावल-दूध, मसूर की दाल आदि का दान करें।



लाल-किताब के उपाय करने के नियम और सावधानियाँ

- (1) एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपाय शुरू करें।
- (2) सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।
- (3) सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।
- (4) कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।
- (5) यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।
- (6) मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।
- (7) एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।
- (8) जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।
- (9) यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ-साथ एक-एक करके दूसरे उपाय करें।
- (10) जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिमा आदि का विचार न करें।
- (11) जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।
- (12) जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।
- (13) उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।



Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive should not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated result

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.